TSS-36506

अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100वीं वर्षगांठ पर उनके
जीवन पर आधारित विशेषांक

द साइलेंट स्ट्रोक

HINDI
THECREATIVEART.IN ENGLISH

The Silent STROKE

Year-2 | Volume No. : 6 | Rs. 250.00 (Colour) I ₹125 B&W

हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा...

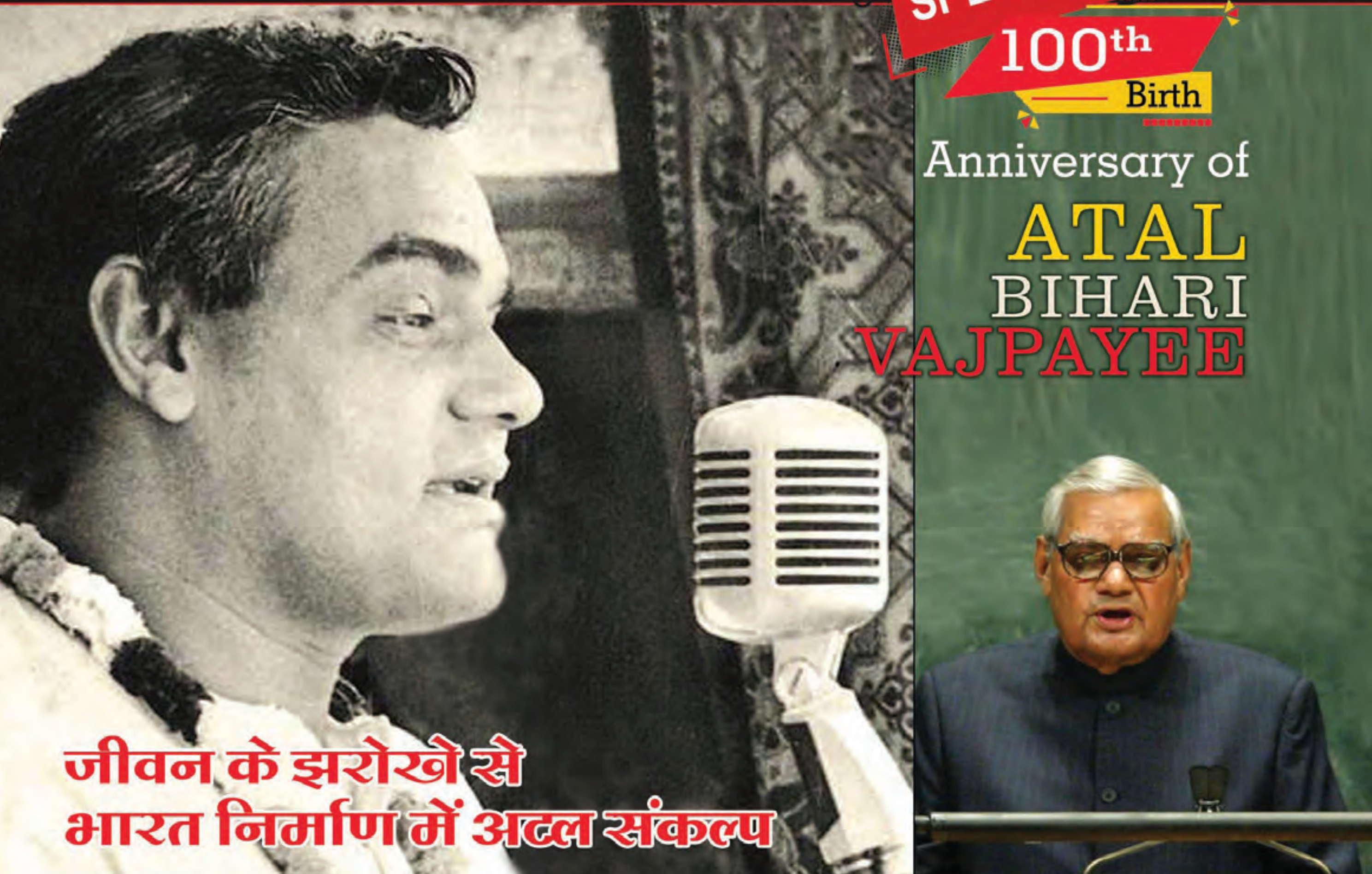

SPECIAL ISSUE

100th Birth Anniversary of

ATAL BIHARI VAJPAYEE

जीवन के झरोखे से भारत निर्माण में अटल संकल्प

Special Guest Editor
PROF. KANHAIYA TRIPATHI

Head of the Editorial: NANDINI SHARMA
CHIEF EDITOR : RAKESH SHARMA 'NISHEETH'
EDITOR : NARENDRA TYAGI I ADITI SINGH BHADAURIYA
SUSHILA GUPTA 'MUDITA'

The CREATIVEART Publisher

शब्दाहुति | PRAKASHAN

A GOLDEN OPPORTUNITY FOR WRITERS

'Get your Book Published'

THECREATIVEART.IN

BOOKS ARE INVITED TO ENCOURAGE THE WRITING OF NEW WRITERS

CONTACT US NOW:

The CREATIVEART Publisher

NARENDRA TYAGI
Publisher

FARIDABAD
+91-9990753336 | 0129-4322979

TCstudio
THECREATIVEART.IN
TCstudio2010@gmail.com | Creativeart012@gmail.com

flipkart.com
amazon

shabdahutiprakashan@gmail.com

सम्पादकीय

राकेश शर्मा 'निशीथ'

मेरी बात...

राष्ट्र की समृद्धि, देशवासियों की खुशहाली एवं युवाओं के आत्मोत्थान के लिए जीवनपर्यन्त संघर्ष करने वाले, भारत माता के सच्चे सपूत भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को भला कौन नहीं जानता। आधुनिक भारत को विश्व बिरादरी की बराबरी में लाने का श्रेय काफी हद तक श्री अटल बिहारी वाजपेयी को जाता है। उन्होंने अपने अथक परिश्रम एवं बौद्धिक क्षमता के बल पर देश को स्वदेशी प्रक्षेपास्त्र एवं मिसाइल बनाने की दिशा में आत्मनिर्भर बनाया। यही कारण है कि उन्होंने 'जय जवान 'जय किसान' के साथ-ही-साथ 'जय विज्ञान' का भी नारा दिया था।

अटल जी लगभग 50 वर्षों तक सांसद रहे। भारत के राजनैतिक इतिहास में अटल का संपूर्ण व्यक्तित्व 'शिखर पुरुष' के रूप में परिलक्षित है। उनकी पहचान एक कुशल राजनीतिज्ञ, सफल प्रशासक, प्रकांड भाषाविज्ञ, सहृदय कवि एवं प्रखर पत्रकार व लेखक के रूप में है। उन्होंने राजनीति को दलगत और स्वार्थ की वैचारिकता से अलग हटकर अपनाया, इसलिए वे अजातशत्रु कहलाये।

उन्होंने जीवन में आने वाली हर विषम परिस्थितियों और चुनौतियों को स्वीकार किया। उन्होंने नीतिगत सिद्धांत और वैचारिकता से कभी समझौता नहीं किया। सभी सामाजिक वर्गों में उनकी स्वीकार्यता और हर राजनीतिक दल के साथ उनका संबंध बहुत अच्छा रहा। यही कारण था कि राजनीति के घोर विरोधी भी उनकी विचारधारा के प्रशंसक थे। ऐसा इसलिए क्योंकि उनके लिए राष्ट्र और राष्ट्रहित सर्वोपरि था। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने तो इनको भारतीय राजनीति में भविष्य का पितामह कहकर संबोधित किया था। उनके विषय में एक बार संसद में पं. नेहरू ने कहा था- यह व्यक्ति एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बनेगा और उनकी यह वाणी सत्य सिद्ध हुई।

अटल जी आधे कवि एवं आधे नेता दिखाई देते थे, क्योंकि राजनीतिज्ञ होते हुए भी उनका पहनावा कवि संपादक एवं लेखक जैसा ही था। उनका कहना था कि मैं राजनीति से दूर रहना चाहता हूँ, लेकिन राजनीति मुझे दूर होने नहीं देती। अटल जी अहिंसा के उपासक होते हुए भी वे राष्ट्र स्वाभिमान की रक्षा के लिए अस्त्र शस्त्रों के उपयोग करने के भी हिमायती थे। उन्होंने जब 13 मई 1998 को ऑपरेशन शक्ति के तहत पोखरण में 5 परमाणु बम का परीक्षण किया तब उन्होंने इसकी सफलता को शब्द दिया था– 'बुद्ध मुस्कुराए'। उस समय शक्तिशाली कहे जाने वाले राष्ट्रों ने दबाव बनाने का भरपूर प्रयास किया, अनेक प्रतिबंध भी लगाए गए, लेकिन अटल जी ने विषम परिस्थितियों में भी पूरे धैर्य के साथ अटलता से सामना किया। अटल जी के जन्मदिन 25 दिसंबर को 'सुशासन दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

उनकी कविताओं में उनके जीवन और राजनीतिक दर्शन का विशाल सम्मिश्रण है। उन्होंने निजी जिंदगी से लेकर राजनीतिक घटनाक्रमों पर बड़े ही दार्शनिक अंदाज में अपनी अनुभूतियों को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी। उनकी हाजिरजवाबी, उनका हास्य-परिहास, उनकी वाणी का ठहराव उन्हें महान व्यक्तिव्य का धनी बनाता है। उनका कहना था कि– छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।

इस अंक में पाठकों के समक्ष वाजपेयी जी के जीवन के कुछ जाने-अनजाने, छुए-अनछुए पहलुओं को रखने का छोटा-सा प्रयास, हमारी ओर से भारत रत्न माननीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को विनम्र श्रद्धांजलि है। सादर नमन।

शेष फिर...

Rakesh sharma

–राकेश शर्मा 'निशीथ'
प्रधान संपादक

Presented by
THE CREATIVEART

द साइलेंट स्ट्रोक
The Silent STROKE

SPECIAL ISSUE ON 100TH ANNIVERSARY OF ATAL BIHARI VAJPAYEE ।

Head of the Editorial
NANDINI SHARMA
Advocate, Supreme Court & High Court

Chief editor :
RAKESH SHARMA 'NISHEETH'

Editor (Hindi)
NARENDRA TYAGI
ADITI SINGH BHADAURIYA
SUSHILA GUPTA 'MUDITA'

Design by
SHIVANGI TYAGI

Edition
25 December 2024
(SPECIAL ISSUE)

©THE CREATIVEART

PRICE
₹ 250-00 (Colour), ₹ 125-00 (Black & White)

Published by:
THE CREATIVEART

Cover photo courtesy: Atal Bihari Vajpayee (FB)

Press :
Images & Impressions Press,

जरूरी सूचना : द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

The CREATIVEART
Big ideas, Great results

E-37A, Uper Ground Floor, Dayal Bagh, Surajkund, Sector 39, Faridabad (HR)
Contact: 9990753336,
Mail: thesilentstroke@gmail.com

WWW.THECREATIVEART.IN

विषय सूची

लेख : अटल बिहारी वाजपेयी : अच्छे कवि, पत्रकार, समझदार मगर कमजोर राजनेता । विलक्षण प्रतिभाओं के धनी अटल बिहारी वाजपेयी । हाँ मैं अटल हूँ । अटल बिहारी वाजपेयी : एक अष्टपैलू व्यक्तित्व राजनीति के सफल पुरोधा थे अटल बिहारी वाजपेयी । राजनीति के अजातशत्रु : अटल बिहारी वाजपेयी । भारत के दसवें प्रधानमंत्रीः अटल बिहारी वाजपेयी । अटल सफ़रनामा भारतीय राजनीति के एक युग का अंत... । **संस्मरण :** श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ बिताए वो दो घंटे । अजात शत्रु वाजपेयी । **कवि :** यदुनंदन प्रसाद शर्मा । मेनिका साकेत डॉ. माधवम सिंह नवदीप राज सक्सेना । अजय कुमार पाण्डेय स्मिता दास । नीतू सिंह राय । अनुपमा 'अनुश्री'

EDITORIAL TEAM

नंदिनी शर्मा पाण्डेय

राकेश शर्मा 'निशीथ'

नरेन्द्र त्यागी

अदिति सिंह भदौरिया

सुशीला गप्ता 'मुदिता'

GUEST EDITOR

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
विशेष अतिथि संपादक

Participants Authors

प्रदीप बालियान

नीलमणि शर्मा

Tripti Arora

डॉ. रज़िया शहेनाज़

मनोज कौशल

अनिल सोनी

डॉ. अर्पण जैन

संध्या राय चौधरी

रमेश चौधरी

डॉ. इतेंद्रधर दुबे

यदुनंदन प्रसाद शर्मा

मेनिका साकेत

डॉ. माधवम सिंह

अजय कु. पाण्डेय

स्मिता दास

डॉ नीतू सिंह राय

अनुपमा 'अनुश्री'

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के ब्लॉग से साभार।

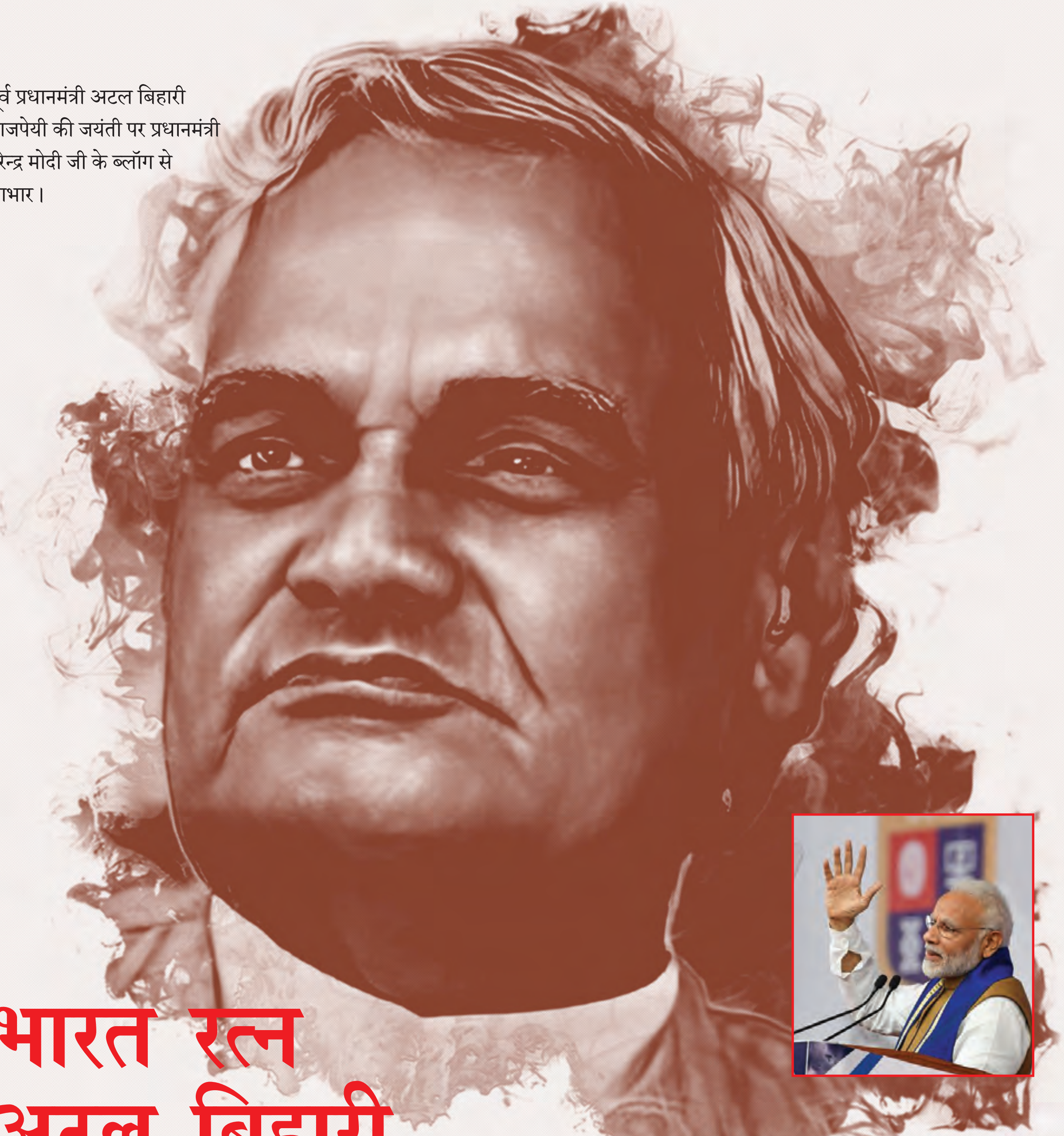

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

नये भारत के विकास की गारंटी

–नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरुं ...
लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरुं?

अटल जी के ये शब्द कितने साहसी हैं कितने गूढ़ हैं। अटल जी कूच से नहीं डरे... उन जैसे व्यक्तित्व को किसी से डर लगता भी नहीं था। वे यह भी कहते थे–'जीवन बंजारों का डेरा, आज यहां, कल कहां कूच है... कौन जानता किधर सवेरा...। आज अगर वे हमारे बीच होते, तो अपने जन्मदिन पर नया सवेरा देख रहे होते। मैं वो दिन नहीं भूल सकता, जब उन्होंने मुझे पास बुलाकर अँकवार में भर लिया था...और जोर से पीठ पर धौल जमा दी थी। वो स्नेह... वो अपनत्व... वो प्रेम... मेरे जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है।

आज 25 दिसंबर का यह दिन भारतीय राजनीति और भारतीय जनमानस के लिए एक तरह से सुशासन का अटल

दिवस है। आज पूरा देश अपने भारत रत्न अटल को, उस आदर्श विभूति के रूप में याद कर रहा है, जिन्होंने अपनी सौम्यता, सहजता और सहृदयता से करोड़ों भारतीयों के मन में जगह बनाई। पूरा देश उनके योगदान के प्रति कृतज्ञ है। उनकी राजनीति के प्रति कृतार्थ है।

इक्कीसवीं सदी को भारत की सदी बनाने के लिए उनकी राज्य सरकार ने जो कदम उठाए, उसने देश को एक नई दिशा, नई गति दी। 1998 के जिस काल में उन्होंने प्रधानमंत्री पद संभाला, उस दौर में पूरा देश राजनीतिक अस्थिरता से घिरा हुआ था। नौ साल में देश ने चार बार लोकसभा के चुनाव देखे थे। लोगों को शंका थी कि यह सरकार भी उनकी उम्मीदों को पूरा नहीं कर पाएगी। ऐसे समय में एक सामान्य परिवार से आने वाले अटल जी ने, देश को स्थिरता और सुशासन का मॉडल दिया। भारत को नव-विकास की गारंटी दी।

वे ऐसे नेता थे, जिनका प्रभाव आज भी अटल है। वे भविष्य के भारत के परिकल्पना पुरुष थे। उनकी सरकार ने देश को सूचना तकनीक और दूरसंचार की दुनिया में तेजी से आगे बढ़ाया। उनके शासन काल में ही, राजग ने टेक्नोलॉजी को सामान्य मानवी की पहुंच तक लाने का काम शुरू किया। भारत के दूरदराज के इलाकों को बड़े शहरों से जोड़ने के सफल प्रयास किए गए। वाजपेयी जी की सरकार में शुरू हुई जिस स्वर्णिम चतुर्भुज योजना ने भारत के महानगरों को एक सूत्र में जोड़ा, वो आज भी लोगों की स्मृतियों पर अमिट है। 'लोकल कनेक्टिविटी' को बढ़ाने के लिए भी राजग गठबंधन की सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना जैसे कार्यक्रम शुरू किए। उनके शासन काल में दिल्ली मेट्रो शुरू हुई, जिसका विस्तार आज हमारी सरकार एक विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा प्रोजेक्ट के रूप में कर रही है। ऐसे ही प्रयासों से उन्होंने न सिर्फ आर्थिक प्रगति को नई शक्ति दी, बल्कि दूरदराज के क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़कर भारत की एकता को भी सशक्त किया।

जब भी सर्वशिक्षा अभियान की बात होती है, तो अटल जी की सरकार का जिक्र जरूर होता है। शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मानने वाले वाजपेयी जी ने ऐसे भारत का सपना देखा था, जहां हर व्यक्ति को आधुनिक और गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले। वे चाहते थे कि भारत के वर्ग, यानी अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, आदिवासी और महिला सभी के लिए शिक्षा सहज और सुलभ बने।

उनकी सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए कई बड़े आर्थिक सुधार किए। इन सुधारों के कारण भाई-भतीजावाद में फंसी देश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिली। उस दौर की सरकार के समय में जो नीतियां बनीं, उनका मूल उद्देश्य सामान्य मानवी के जीवन को बदलना ही रहा।

उनकी सरकार के कई ऐसे अद्भुत और साहसी उदाहरण हैं, जिन्हें आज भी हम देशवासी गर्व से याद करते हैं। देश को अब भी 11 मई, 1998 का वो गौरव दिवस याद है, राजग सरकार बनने के कुछ ही दिन बाद पोखरण में सफल परमाणु परीक्षण हुआ। इसे 'ऑपरेशन शक्ति' का नाम दिया गया। इस परीक्षण के बाद दुनियाभर में भारत के वैज्ञानिकों को लेकर चर्चा होने लगी। इस बीच कई देशों ने खुलकर नाराजगी जताई, लेकिन तब की सरकार ने किसी दबाव की परवाह नहीं की। पीछे हटने की जगह 13 मई को परमाणु परीक्षण का एक और धमाका कर दिया गया। 11 मई को हुए परीक्षण ने तो दुनिया को भारत के वैज्ञानिकों की शक्ति से परिचय कराया था। लेकिन 13 मई को हुए परीक्षण ने दुनिया को यह दिखाया कि भारत का नेतृत्व एक ऐसे नेता के हाथ में है, जो एक अलग मिट्टी से बना है।

उन्होंने पूरी दुनिया को यह संदेश दिया, यह पुराना भारत नहीं है। पूरी दुनिया जान चुकी थी कि भारत अब दबाव में आने वाला देश नहीं है। इस परमाणु परीक्षण की वजह से प्रतिबंध भी लगे, लेकिन देश ने सबका मुकाबला किया।

वाजपेयी सरकार के शासन काल में कई बार सुरक्षा संबंधी चुनौतियां आईं। कारगिल युद्ध का दौर आया। संसद पर आतंकियों ने कायराना प्रहार किया। अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले से वैश्विक स्थितियां बदलीं, लेकिन हर स्थिति में अटल जी के लिए भारत और भारत का हित सर्वोपरि रहा।

जब भी आप वाजपेयी जी के व्यक्तित्व के बारे में किसी से बात करेंगे, तो वह यही कहेगा कि वे लोगों को अपनी तरफ खींच लेते थे। उनकी बोलने की कला का कोई सानी नहीं था। कविताओं और शब्दों में उनका कोई जवाब नहीं था। विरोधी भी वाजपेयी जी के भाषणों के मुरीद थे। युवा सांसदों के लिए वे चर्चाएं सीखने का माध्यम बनतीं। कुछ सांसदों की संख्या लेकर भी, वे कांग्रेस की कुनीतियों का प्रखर विरोध करने में सफल होते। भारतीय राजनीति में वाजपेयी जी ने दिखाया,

ईमानदारी और नीतिगत स्पष्टता का अर्थ क्या है।

संसद में कहा गया उनका यह वाक्य– 'सरकारें आएंगी-जाएंगी, पार्टियां बनेंगी-बिगड़ेंगी मगर ये देश रहना चाहिए।' आज भी ये मंत्र की तरह हम सबके मन में गूंजता रहता है।

वे भारतीय लोकतंत्र को समझते थे। वे यह भी जानते थे कि लोकतंत्र का मजबूत रहना कितना जरूरी है। आपातकाल के समय उन्होंने दमनकारी कांग्रेस सरकार का जमकर विरोध किया, यातनाएं झेलीं। जेल जाकर भी संविधान के हित का संकल्प दोहराया। राजग की स्थापना के साथ उन्होंने गठबंधन की राजनीति को नए सिरे से परिभाषित किया। वे अनेक दलों को साथ लाए और राजग को विकास, देश की प्रगति और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का प्रतिनिधि बनाया।

प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए उन्होंने विपक्ष की आलोचनाओं का जवाब हमेशा बेहतरीन तरीके से दिया। वे ज्यादातर समय विपक्षी दल में रहें, लेकिन नीतियों का विरोध तर्कों और शब्दों से किया। एक समय उन्हें कांग्रेस ने गद्दार तक कह दिया था, उसके बाद भी उन्होंने कभी असंसदीय शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया।

उनमें सत्ता की लालसा नहीं थी। 1996 में उन्होंने जोड़-तोड़ की राजनीति न चुनकर, इस्तीफा देने का रास्ता चुन लिया। राजनीतिक षड्यंत्रों के कारण 1999 में उन्हें सिर्फ एक वोट के अंतर के कारण पद से इस्तीफा देना पड़ा। कई लोगों ने उनसे इस तरह की अनैतिक राजनीति को चुनौती देने के लिए कहा, लेकिन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी शुचिता की राजनीति पर चले। अगले चुनाव में उन्होंने मजबूत जनादेश के साथ वापसी की।

संविधान के मूल्य संरक्षण में भी उनके जैसा कोई नहीं था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निधन का उन पर बहुत प्रभाव पड़ा था। वे आपातकाल के खिलाफ लड़ाई का भी बड़ा चेहरा बने। आपातकाल के बाद 1977 के चुनाव से पहले उन्होंने 'जनसंघ' के जनता पार्टी में विलय पर भी सहमति जता दी। मैं जानता हूं कि यह निर्णय सहज नहीं रहा होगा, लेकिन वाजपेयी जी के लिए हर राष्ट्रभक्त कार्यकर्ता की तरह दल से बड़ा देश, संगठन से बड़ा संविधान था।

हम सब जानते हैं, अटल जी को भारतीय संस्कृति से भी बहुत लगाव था। भारत के विदेश मंत्री बनने के बाद जब संयुक्त राष्ट्र में भाषण देने का अवसर आया, तो उन्होंने अपनी हिंदी से पूरे देश को खुद से जोड़ा। पहली बार किसी ने हिंदी में संयुक्त राष्ट्र में अपनी बात कही। उन्होंने भारत की विरासत को विश्व पटल पर रखा। उन्होंने सामान्य भारतीय भाषा को संयुक्त राष्ट्र के मंच तक पहुंचाया।

राजनीतिक जीवन में होने के बाद भी, वे साहित्य और अभिव्यक्ति से जुड़े रहें । वे एक ऐसे कवि और लेखक थे, जिनके शब्द हर विपरीत स्थिति में व्यक्ति को आशा और नव-सृजन की प्रेरणा देते थे। वे हर उम्र के भारतीय के प्रिय थे। हर वर्ग के अपने थे।

मेरे जैसे भारतीय जनता पार्टी के असंख्य कार्यकर्ताओं को उनसे सीखने का, उनके साथ काम करने का, उनसे संवाद करने का अवसर मिला। अगर आज भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है, तो इसका श्रेय उस अटल आधार को है, जिस पर यह दृढ़ संगठन खड़ा है।

उन्होंने भाजपा की नींव तब रखी, जब कांग्रेस जैसी पार्टी का विकल्प बनना आसान नहीं था। उनका नेतृत्व, उनकी राजनीतिक दक्षता, साहस और लोकतंत्र के प्रति उनके अगाध समर्पण ने भाजपा को भारत की लोकप्रिय पार्टी के रूप में प्रशस्त किया। लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी जैसे दिग्गजों के साथ, उन्होंने पार्टी को अनेक चुनौतियों से निकालकर सफलता के सोपान तक पहुंचाया।

जब भी सत्ता और विचारधारा के बीच एक को चुनने की स्थितियां आईं, उन्होंने इस चुनाव में विचारधारा को खुले मन से चुन लिया। वे देश को यह समझाने में सफल हुए कि कांग्रेस के दृष्टिकोण से अलग एक वैकल्पिक वैश्विक दृष्टिकोण संभव है। ऐसा दृष्टिकोण वास्तव में परिणाम दे सकता है। आज उनका रोपित बीज, एक वटवृक्ष बनकर राष्ट्र सेवा की नव-पीढ़ी को रच रहा है। अटल जी की सौवीं जयंती, भारत में सुशासन के एक राष्ट्र पुरुष की जयंती है। आइए... हम सब इस अवसर पर, उनके सपनों को साकार करने के लिए मिलकर काम करें। हम एक ऐसे भारत का निर्माण करें, जो सुशासन, एकता और गति के अटल सिद्धांतों का प्रतीक हो। मुझे विश्वास है, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के सिखाए सिद्धांत ऐसे ही, हमें भारत को नव प्रगति और समृद्धि के पथ पर प्रशस्त करने की प्रेरणा देते रहेंगे।

***

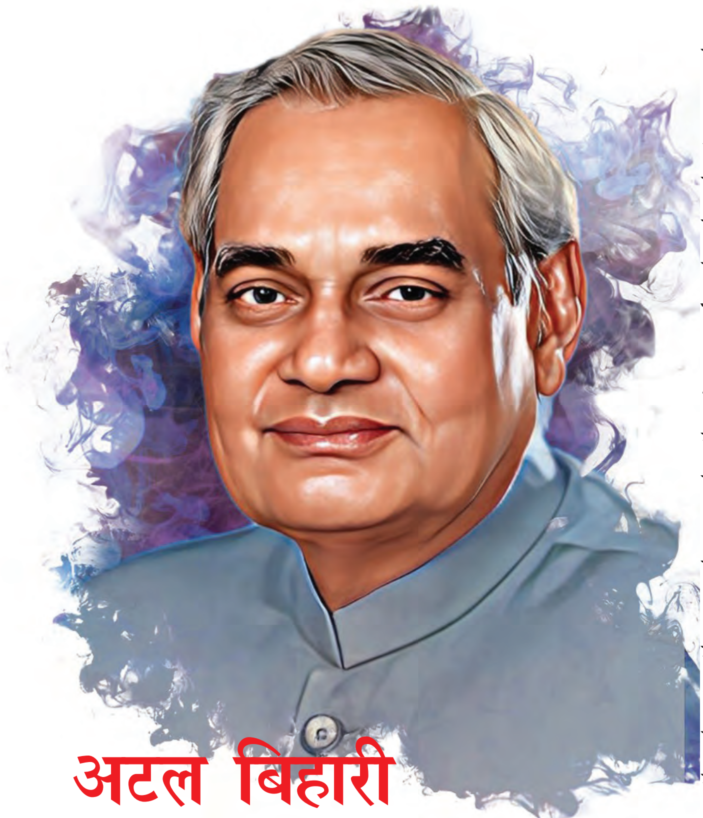

अटल बिहारी वाजपेयी :

अच्छे कवि, पत्रकार, समझदार मगर कमजोर राजनेता

इस शीर्षक पर किसी भी भाजपाई, जनसंघी या अटल बिहारी वाजपेयी के प्रशंसक को शिकायत हो सकती है। लेकिन जब हम किसी भी व्यक्ति, साहित्यकार या राजनेता का निष्पक्ष विश्लेषण और आकलन करते हैं तो उसकी अच्छाई और बुराई, गुण-अवगुण पर विस्तृत सोच-विचार करना चाहिए। तभी हम किसी उचित निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी जीवित होते तो 100 वर्ष के हो गए होते। उनका जन्म 25 दिसंबर 1924 को हुआ था। 16 अगस्त, 2018 को वाजपेयी का निधन हो गया था। हालांकि वे अब नहीं हैं, लेकिन उनकी मौजूदगी भारतीय राजनीति में हमेशा रहेगी। वे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहें– पहले 16 मई 1996 से पहली जून 1996 तक तेरह दिन, फिर 19 मार्च, 1998 से 13 अक्टूबर 1999 तक 8 महीने और उसके बाद 13 अक्टूबर 1999 से 22 मई 2004 तक। बतौर राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी हर मुमकिन ऊंचाई तक पहुंचे, वे प्रधानमंत्री के तौर पर अपना कार्यकाल पूरा करने वाले पहले ग़ैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री रहे।

हाजिरजवाब अटल

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने दमदार भाषणों, बोलचाल की शैली और अच्छे वक्ता के तौर पर हमेशा याद किए जाएंगे। उनकी हाजिरजवाबी काफी मशहूर थी। उनकी हाजिरजवाबी की कुछ घटनाएं -

बात 1975 की है, जब देश में आपातकाल लगा था। तब इंदिरा गांधी की खूब आलोचना हुई थी और यही कारण था कि 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस बुरी तरह हार गई थी और उसके अलावा देश में पहली गैर-कांग्रेसी (जनता पार्टी) सरकार बनी थी। कांग्रेस ने तब इंदिरा गांधी को पार्टी का नंबर वन नेता बताया था। इस पर वाजपेयी ने तंज कसते हुए कहा था 'इंदिरा गांधी नंबर एक, नंबर दो कौन है? नारी नंबर एक, बाकी सब दस नंबरी।'

इंदिरा गांधी के ही संदर्भ में एक बात और है। एक बार इंदिरा गांधी ने अटल बिहारी वाजपेयी की आलोचना करते हुए कहा था कि वो बहुत हाथ हिला-हिलाकर बात करते हैं। तब वाजपेयी ने जवाब दिया था 'वो सब तो ठीक है, आपने (इंदिरा गांधी) किसी को पैर हिलाकर बात करते देखा है क्या?'

बात 1979 की है जब अटल बिहारी वाजपेयी आगरा में थे। देश में दाल का संकट था। तब उन्होंने कहा था कि दाल

प्रदीप बालियान

उप-संपादक,
मनोरमा इयर बुक
नई दिल्ली

भी मेरी ही तरह है। अगर घर में मेहमान आ जाएं तो 'तीन बुलाए तेरह आए, दे दाल में पानी' जैसी स्थिति हो जाती है।

एक घटना 1980 की है, जब हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भजन लाल अपने समर्थकों सहित जनता पार्टी का साथ छोड़कर कांग्रेस में चले गए। तब वाजपेयी जी ने चुटकी लेते हुए कहा था 'भजनलाल पूरी भजन मंडली सहित कांग्रेस में कीर्तन करने चले गए'।

बात 1985 की है जब ग्वालियर में लोकसभा चुनाव में 45 हजार वोटों से पिछड़ने के बाद अपनी पराजय स्वीकार करते हुए वाजपेयी जी ने सिंधिया को बधाई दी थी और अपने समर्थकों से कहा था- भूखे भजन न होय गोपाला, चल चलें चंबल की शाला। (दरअसल, उनके साथ उनके समर्थक भी काफी देर से भूखे-प्यासे बैठे थे)। साथ ही उन्होंने ये भी कहा था- 'बड़े बे-आबरू होकर तेरे कूचे से निकले हम।'

एक घटना 1999 की है जब प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक लाहौर बस यात्रा की शुरुआत की थी और खुद भी बस में सवार होकर लाहौर पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने वहां के गवर्नर हाउस में जबरदस्त भाषण दिया था और पाकिस्तान को फटकार लगाते हुए कहा था- 'आप दोस्त बदल सकते हैं, पड़ोसी नहीं। इतिहास बदल सकते हैं, भूगोल नहीं।'

कभी केवल दो सीटों वाली पार्टी भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में सरकार बनाने की उपलब्धि केवल अटल बिहारी वाजपेयी की भारतीय राजनीति में सहज स्वीकार्यता के बूते की बात थी, जिसे भांपते हुए राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ को भी लालकृष्ण आडवाणी को पीछे रखकर वाजपेयी को आगे बढ़ाना पड़ा था।

प्रधानमंत्री पद पर रहने के दौरान अटल बिहारी वाजपेयी ने ये साबित किया कि देश में गठबंधन सरकारों को भी सफलता से चलाया जा सकता है। जब वाजपेयी स्थिर सरकार के प्रमुख बने तो उन्होंने कई बड़े फ़ैसले किए और देश की राजनीति को हमेशा के लिए बदल दिया। वाजपेयी की कुशलता ने एक तरह से दक्षिणपंथ की राजनीति को भारतीय जनमानस में इस तरह रचा बसा दिया कि दशकों बाद भारतीय जनता पार्टी ने ऐसा बहुमत हासिल कर दिखाया जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की जाती थी।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी के प्रमुख फ़ैसलों और उपलब्धियों पर एक नज़रः

सड़कों का विकास

प्रधानमंत्री के रूप में देश में सड़कों के विकास को वाजपेयी का सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण काम माना जाता है। उन्होंने चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और मुंबई को जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना लागू की। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना लागू की। इस फ़ैसले ने देश के आर्थिक विकास को गति दी।

सड़कों का विकास ऐसा है जो आम आदमी को भी साफ दिखाई देता है। इसलिए लोग इससे बहुत खुश हुए। तभी 2004 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने इसका लाभ उठाना चाहा लेकिन वह शाइनिंग इंडिया के दम पर चुनाव जीतने में नाकाम रही। परिणाम कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए की सरकार बनी। यूपीए सरकार बनते ही सड़क परियोजनाओं के लगभग सभी अनुबंध रद्द कर अपने चहेतों को अनुबंध दिए गए। इसमें खूब पैसा खाया और खिलाया गया। वाजपेयी सरकार के दौरान बिछे सड़कों के जाल से ही यूपीए दूसरे कार्यकाल के लिए सत्ता में आ सकी।

निजीकरण और विनिवेश

वाजपेयी काल के दौरान देश में निजीकरण को तेज़ी से बढ़ाया गया, जहां से वापसी की कोई गुंजाइश नहीं बची। इसे उनके करीबी प्रमोद महाजन की सोच का असर भी माना गया था। वाजपेयी ने इसके लिए 1999 में विनिवेश मंत्रालय गठन किया था। अरुण शौरी को विनिवेश मंत्री बनाया गया। विनिवेश मंत्रालय ने वाजपेयी के नेतृत्व में भारत एल्यूमिनियम कंपनी (बाल्को), हिंदुस्तान ज़िंक, इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड और विदेश संचार निगम लिमिटेड जैसी सरकारी कंपनियों में सरकारी हिस्सेदारी बेचने की प्रक्रिया शुरू की।

वाजपेयी से पहले देश में बीमा क्षेत्र सरकारी कंपनियों के पास था, लेकिन वाजपेयी सरकार ने इसमें विदेशी निवेश के रास्ते खोले। उन्होंने बीमा कंपनियों में विदेशी निवेश की सीमा 26 प्रतिशत तक कर दी जिसे 2015 में नरेंद्र मोदी सरकार ने बढ़ाकर 49 प्रतिशत कर दिया। इन कंपनियों के निजीकरण से नियुक्तियों में आरक्षण की बाध्यता भी ख़त्म हो गई। जिन लोगों का कभी भी किसी भी काम से सरकारी कर्मचारियों से वास्ता पड़ा होगा वो जरूर मानेंगे कि यह कई मायनों में ऐतिहासिक कदम था लेकिन इस क़दम की आलोचना भी की जाती है।

आलोचकों के अनुसार निजीकरण से कंपनियों ने मुनाफ़े को ही अपना उद्देश्य बना लिया। लेकिन यह भी सच है कि इससे लोगों को बेहतर सुविधाएं मिलनी शुरू हुई। सरकारी कर्मचारियों के लिए पेंशन योजना को वाजपेयी सरकार ने ही ख़त्म किया था। लेकिन जनप्रतिनिधियों की पेंशन सुविधा खत्म नहीं की गई जिसकी खूब आलोचना की जाती है।

दूसरी संचार क्रांति

राजीव गांधी और उनके सहयोगी सैम पित्रोदा को भारत में संचार क्रांति का जनक माना जाता है। लेकिन उसे आम लोगों तक संचार पहुंचाने का काम वाजपेयी सरकार ने ही किया था। 1999 में वाजपेयी ने भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) के एकाधिकार को ख़त्म करते हुए नई दूरसंचार नीति लागू की। इससे रेवेन्यू शेयरिंग मॉडल के ज़रिए लोगों को सस्ती दरों पर फ़ोन कॉल करने का फ़ायदा मिला और सस्ती मोबाइल फ़ोन का दौर शुरू हुआ। यह अलग बात है कि नई दूरसंचार नीति की खामी का फायदा बाद की यूपीए सरकार ने उठाया और देश के सबसे बड़े 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले का रिकार्ड बनाया।

मुफ्त शिक्षा

छह से 14 वर्ष के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने का अभियान वाजपेयी के कार्यकाल में ही शुरू किया गया। यह अभियान 2000-01 में लागू हुआ, जिसके कारण बीच में पढ़ाई छोड़ देने वाले बच्चों की संख्या में कमी दर्ज की गई। वर्ष 2000 में 40 प्रतिशत बच्चे शिक्षा बीच में ही छोड़ देते थे लेकिन 2005 में यह संख्या घटकर 10 प्रतिशत रह गई। इस अभियान से अटल बिहारी वाजपेयी के लगाव को इस बात से समझा जा सकता है कि उन्होंने इस अभियान को बढ़ावा देने वाली थीम लाइन 'स्कूल चले हम' ख़ुद ही लिखी थी।

पोखरण-2

वाजपेयी के नेतृत्व में मई 1998 में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया। इससे पहले 1974 में पहला परमाणु परीक्षण किया गया था। वाजपेयी ने परीक्षण ये दिखाने के लिए किया था कि भारत परमाणु संपन्न देश है। हालांकि उनके आलोचक इस परीक्षण की ज़रूरत पर सवाल उठाते रहे हैं, क्योंकि जवाब के तौर पर पाकिस्तान ने भी परमाणु परीक्षण किया था। इसके एक आलोचक ने तो देश के प्रधानमंत्री और वैज्ञानिकों को गाली देकर साहित्य अकादमी पुरस्कार तक ले लिया था।

वह ऐसा दौर था जब विश्व हिंदू परिषद के लोगों ने ये मांग की थी कि पोखरण की रेत को पूरे भारत में प्रसाद के तौर पर बांटा जाए। इस परीक्षण के बाद अमरीका, ब्रिटेन, कनाडा और कई पश्चिमी देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए। लेकिन वाजपेयी ने अपने कूटनीतिक कौशल के कारण 2001 तक आते-आते ज़्यादातर देशों ने सारे प्रतिबंध हटा लिए थे।

पोटा कानून

वर्ष 2001 में संसद पर हमले के बाद आतंरिक सुरक्षा के लिए सख़्त कानून बनाने की मांग ज़ोर पकड़ने लगी। तब वाजपेयी सरकार ने पोटा कानून बनाया। यह आतंकवाद निरोधी कानून था, जिसे 1995 के टाडा कानून के मुक़ाबले बेहद कड़ा माना गया था। निसंदेह देश में इस तरह का कानून होना चाहिए। हालांकि इस कानून के बनने के बाद ही इसकी आलोचनाओं का दौर शुरू हो गया। इसके ज़रिए सरकार पर विरोधियों को निशाना बनाने का आरोप लगाया गया। केवल दो वर्ष के अंदर इस कानून के तहत 800 लोगों को गिरफ़्तार किया गया और क़रीब 4000 लोगों पर मुक़दमे दर्ज किए गए। तमिलनाडु में एमडीएमके नेता वाइको को भी पोटा कानून के तहत गिरफ़्तार किया गया था।

दो वर्ष के दौरान वाजपेयी सरकार ने 32 संगठनों पर पोटा के तहत प्रतिबंध लगाया। 2004 में जब यूपीए सरकार सत्ता में आई तब ये क़ानून निरस्त कर दिया गया, जिसका दुष्परिणाम

26 नवंबर, 2008 को मुंबई पर आतंकी हमलों के रूप में सामने आया। देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ की यह चरम सीमा थी। कांग्रेस के नेतृत्व में तत्कालीन यूपीए सरकार ने इस हमले के लिए हिंदुओं को ही जिम्मेदार ठहराने की पूरी कोशिश की। इसके लिए पाकिस्तान ने भी घिनौनी साजिश रची थी और आतंकियों के हाथों पर कलावे बांधे गए थे ताकि उन्हें हिंदु सिद्ध किया जा सके। लेकिन कांग्रेस और पाकिस्तान के नापाक मंसूबों पर उस समय पानी फिर गया जब हमले के दौरान एक आतंकी कसाब को पकड़ लिया गया और पाकिस्तानी साजिश बेनकाब हो गई।

संविधान समीक्षा आयोग का गठन

वाजपेयी सरकार ने संविधान में संशोधन की ज़रूरत पर विचार करने के लिए पहली फरवरी, 2000 को संविधान समीक्षा के राष्ट्रीय आयोग का गठन किया था। हालांकि ऐसे आयोग के गठन का विरोध विपक्षी दलों के अलावा तत्कालीन राष्ट्रपति आर के नारायणन ने भी किया था। 26 जनवरी, 2000 को 50वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर संबोधन में आर के नारायणन ने संविधान समीक्षा की ज़रूरत पर सवाल उठाते हुए कहा था कि- जब संशोधन की व्यवस्था है तो फिर समीक्षा क्यों होनी चाहिए? लेकिन वाजपेयी सरकार ने आयोग का गठन किया और उसे छह महीने का समय दिया गया। उस समय इस बात की आशंका प्रकट की गई कि जिस संविधान को तैयार करने में तीन वर्ष के करीब वक्त लगा उसकी समीक्षा महज छह महीने में कैसे हो पाएगी।

बहरहाल सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश एम एन वेंकटचलैया के नेतृत्व में आयोग ने 249 सिफ़ारिशें की थीं, लेकिन इस आयोग और उनकी सिफ़ारिशों का बड़े पैमाने पर विरोध हुआ था, जिसके बाद वाजपेयी सरकार संविधान को संशोधित करने के काम को आगे नहीं बढ़ा पाई। निसंदेह यह वाजपेयी का दूरगामी कदम था। जिस तरह आरक्षण, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सहित कई अन्य कानूनों का दुरुपयोग किया जा रहा है, उसे देखते हुए संविधान की समीक्षा समय की मांग है।

जाति गणना पर रोक

वर्ष 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के बनने से पहले एच डी देवगौड़ा सरकार ने जाति आधारित जनगणना कराने को मंजूरी दे दी थी इसलिए 2001 में जातिगत जनगणना होनी थी। मंडल कमीशन के प्रावधानों को लागू करने के बाद देश में पहली बार जनगणना 2001 में होनी थी, ऐसे में मंडल कमीशन के प्रावधानों को ठीक ढंग से लागू किया जा रहा है या नहीं इसे देखने के लिए जातिगत जनगणना कराए जाने की मांग ज़ोर पकड़ रही थी। न्यायिक प्रणाली की ओर से बार-बार तथ्यात्मक आंकड़ों को जुटाने की बात कही जा रही थी ताकि कोई ठोस कार्य प्रणाली बनाई जा सके। तत्कालीन रजिस्ट्रार जनरल ने भी जातिगत जनगणना की मंजूरी दे दी थी। लेकिन वाजपेयी सरकार ने इस फ़ैसले को पलट दिया जिसके कारण जाति आधारित जनगणना नहीं हो पाई।

इसके लिए कुछ लोग और नेता वाजपेयी की आलोचना करते रहे हैं। उनके अनुसार वाजपेयी के फ़ैसले से आबादी के हिसाब से हक की मुहिम को धक्का पहुंचा। लेकिन जाति गणना के इतिहास पर विचार किया जाए तो इसके विभाजनकारी दुष्परिणामों से इनकार नहीं किया जा सकता। इसके लिए भारत में 1872 में पहली जनगणना से ही जातिवार गणना का कुप्रयास किया गया ताकि हिंदुओं को विभाजित किया जा सके। उस समय तक देश में जाति नहीं बल्कि वरण व्यवस्था थी और यह जन्म से नहीं बल्कि कर्म के आधार पर निर्धारित होता था।

हिंदू समाज कर्म के आधार पर संगठित था। इसका प्रमाण यह खुद एच एच रिस्ले हैं, जिन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि जाति का पता करने में उन्हें कितनी परेशानी हुई। तब ब्राह्मणों को छोड़कर किसी अन्य को अपनी जाति मालूम ही नहीं थी क्योंकि कर्म के आधार पर लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और अन्य कार्यों का वरण करते थे और वरण बदलता रहता था। जाति की इस खोज में अंग्रेजों ने कहीं कर्म तो कहीं क्षेत्र के आधार पर ही जाति के नाम दे दिए। 1901 में जहां 1646 जातियां थी वहीं 1931 में 4147 हो गई। 2011 की जनगणना के अनुसार देश में जातियों की संख्या 46 लाख से अधिक हो गई। इसका तात्पर्य है कि विभाजन बढ़ता जा रहा है। इस घातक प्रवृत्ति पर निश्चित रूप से रोक लगनी चाहिए और इस मायने में वाजपेयी सरकार का कदम बेहद उचित और दूरगामी था।

प्रमुख असफलताएं और कमजोरी

अटल बिहारी वाजपेयी को उनके प्रशंसक प्रायः उनके नाम के अनुरूप मजबूत और कुशल राजनेता मानते हैं। पोखरण-2 के समय उनका यह रूप सबने देखा भी था जब उन्होंने कड़ी वैश्विक प्रतिक्रिया की आशंका से निडर रहकर आगे कदम बढ़ाया और परमाणु परीक्षण किए। इससे भारत परमाणु शक्ति

सम्पन्न देशों के क्लब में शामिल हो गया। लेकिन कारगिल के समय सुनहरी अवसर मिलने के बावजूद वायु सेना को समय पर युद्ध में नहीं उतारने, सेना को पाकिस्तान में घुसकर मारने की अनुमति नहीं देने और कंधार कांड में आतंकियों के समक्ष घुटने टेकने से वाजपेयी की कमजोर नेता की छवि सामने आई। यह वाजपेयी सरकार पर ऐसा कलंक है जो कभी नहीं मिट सकता।

वाजपेयी की प्रमुख असफलताओं पर एक नज़र:

लाहौर बैठक

प्रधानमंत्री के तौर पर अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत और पाकिस्तान के आपसी रिश्तों को सुधारने के प्रयास तेज़ किए थे। उन्होंने फरवरी, 1999 में दिल्ली-लाहौर बस सेवा शुरू की थी। पहली बस सेवा से वे ख़ुद लाहौर गए और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ के साथ मिलकर लाहौर दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए। ये क़दम उन्होंने प्रधानमंत्री के तौर पर अपने दूसरे कार्यकाल में उठाया था।

वाजपेयी इस लाहौर यात्रा के दौरान मीनार-ए-पाकिस्तान भी गए। वास्तव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमेशा से पाकिस्तान के अस्तित्व को नकारता रहा है और अखंड भारत की बात करता रहा है। वाजपेयी का मीनार-ए-पाकिस्तान जाना एक तरह से पाकिस्तान की संप्रभुता को संघ की ओर से भी स्वीकार किए जाने का संकेत माना गया। तब तक भारत का कोई कांग्रेसी प्रधानमंत्री भी मीनार-ए-पाकिस्तान जाने का साहस नहीं जुटा पाया था। मीनार-ए-पाकिस्तान वह जगह है जहां पाकिस्तान को बनाने का प्रस्ताव 23 मार्च, 1940 को पास किया गया था।

मीनार-ए-पाकिस्तान जाकर वाजपेयी ने कहा था कि मुझे काफ़ी कुछ कहा गया है लेकिन मुझे उसमें कोई लॉजिक नज़र नहीं आता। इसलिए मैं यहां आना चाहता था। मैं कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान के अस्तित्व को मेरे स्टाम्प की ज़रूरत नहीं है, मुझसे अगर भारत में सवाल पूछे गए तो मैं वहां भी जवाब दूंगा। लेकिन कवि ह्दय वाजपेयी के इस प्रयास का पाकिस्तान ने कारगिल के रूप में जवाब दिया। ऐसे प्रयास करने से पहले हमें इतिहास से सीख लेनी चाहिए और इतिहास की सीख यही है कि पाकिस्तान की बुनियाद ही भारत और हिंदुओं के विरोध पर टिकी है इसलिए उससे मित्रता की आस करना भी बेवकूफी है। भारत के ऐसे हर प्रयास का पाकिस्तान ने पीठ में छुरा घोंपकर जवाब दिया है। जाहिर है कि वाजपेयी की लाहौर यात्रा बहुत बड़ी नाकामी थी।

कारगिल की नाकामी

वाजपेयी की लाहौर यात्रा के तुरंत बाद पाकिस्तानी सैनिकों ने कारगिल में भारतीय सीमा में घुसपैठ कर ली। इसके बाद पाकिस्तानी सैनिकों को उनकी जगह वापस पहुंचाने के लिए दो महीने तक संघर्ष चला। इस संघर्ष में आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार भारत की तरफ़ से 527 जवान वीरगति को प्राप्त हुए थे। हालांकि 1947 में कबाइलियों और बाद में आतंकियों के जरिए पाकिस्तान बार-बार भारत पर हमले करता रहा है। लेकिन पाकिस्तानी सैनिकों ने पहली बार भारतीय सीमा के अंदर आकर आक्रमण किया था, इसके लिए वाजपेयी की आलोचना होती रही।

चूंकि हमला पहले पाकिस्तान ने किया था इसलिए भारत को कड़ा जवाब देने का अधिकार था। लेकिन वाजपेयी सरकार ने समय पर वायुसेना को युद्ध में शामिल होने की अनुमति नहीं दी और हमारे जवानों की जान जाती रहीं। अगर वायुसेना को खुलकर कार्रवाई करने की छूट दी जाती तो कारगिल तो बहुत पहले मुक्त होता ही पाकिस्तान के कब्जे से आधे कश्मीर को भी वापस ले लिया जाता। जाहिर है ये वाजपेयी की बड़ी कमजोरी थी।

कंधार की नाकामी

कंधार कांड भी वाजपेयी की बड़ी नाकामी थी। 24 दिसंबर, 1999 को पाकिस्तान स्थित चरमपंथी गुट हरकत-उल-मुजाहिदीन के आतंकियों ने आईसी-814 विमान का अपहरण कर लिया। काठमांडू से दिल्ली आ रहे इस विमान में 176 यात्री और चालक दल के 15 लोग सवार थे। भारतीय सीमा में इस विमान का अपहरण कर लिया गया और अपहरणकर्ता इस विमान को अमृतसर, लाहौर, दुबई होते हुए अफ़ग़ानिस्तान के कंधार ले गए। आतंकियों ने भारत सरकार से तीन आतंकी मुश्ताक अहमद जरगर, अहमद ओमार सईद शेख और मौलाना मसूद अजहर को रिहा करने की मांग की।

तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह इन आतंकियों को लेकर कंधार गए और यात्रियों को रिहा कराया। कहा जाता है कि वाजपेयी सरकार ने आम लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी लेकिन कंधार संकट वाजपेयी सरकार पर बहुत बड़ा कलंक है। आतंकियों के आगे झुककर और देश के रक्षा मंत्री का आतंकियों को छोड़ने जाना बेहद शर्मनाक था।

आगरा बैठक

वाजपेयी ने लाहौर यात्रा और कारगिल की नाकामी से भी कुछ नहीं सीखा। पाकिस्तान की कमान कारगिल के जिम्मेदार परवेज़ मुशर्रफ़ के हाथों में आने के बाद भी वाजपेयी ने रिश्ते को सुधारने के लिए बातचीत को वरीयता दी। आगरा में वाजपेयी और मुशर्रफ के बीच हाई प्रोफ़ाइल मुलाकात हुई लेकिन ये बातचीत भी नाकाम हो गई।

संसद पर हमला

प्रधानमंत्री के तौर पर ये वाजपेयी के पूर्ण कार्यकाल का दौर था जब 13 दिसंबर, 2001 को पांच चरमपंथियों ने भारतीय संसद पर हमला कर दिया। ये भारतीय संसदीय इतिहास का सबसे काला दिन माना जाता है । इस हमले में भारत के किसी नेता को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था लेकिन पांचों आतंकी और कई सुरक्षाकर्मी मारे गए थे। उस समय भी वाजपेयी और उनके मंत्री पाकिस्तान को कोरी धमकी देने तक सीमित रहें। इससे भी आतंकियों और उनके आका पाकिस्तान के लिए यह पुख्ता हो गया कि वे कुछ भी करें भारत कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर सकता। बाद में पुलवामा, उड़ी और पठानकोट हमलों के बाद भारत की कड़ी कार्रवाई से स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान और उसके आतंकी कैसी जुबान समझते हैं। अगर वाजपेयी ने पहले ही ऐसी सख्त कार्रवाई की होती तो उन पर इतने नाकामी के दाग नहीं लगते।

दो बड़ी भ्रांतियां और सच

कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता प्रायः दावा करते हैं कि अटल बिहारी वाजपेयी ने सार्वजनिक रूप से इंदिरा गाँधी की प्रशंसा करते हुए उन्हें दुर्गा की उपाधि दी थी। इस बात को अकसर कांग्रेस के प्रचार में इस्तेमाल किया जाता है। इस भ्रांति या झूठ का खंडन स्वयं अटल बिहारी वाजपेयी ने एक साक्षात्कार में किया था। इंडिया टीवी के रजत शर्मा के साथ जनता की अदालत कार्यक्रम में वाजपेयी ने स्पष्ट किया था- "मैंने दुर्गा नहीं कहा। यह अखबार वालों ने छाप दिया और मैं खंडन करता रह गया। श्रीमती पुपुल जयकर इंदिरा के बारे में पुस्तक लिखना चाहती थी और उसमें इस बात का उल्लेख करना चाहती थी कि वाजपेयी ने इंदिरा को दुर्गा कहा है। वो मेरे पास आई। मैंने कहा कि मैंने ये नहीं कहा। मेरे नाम से छप जरूर गया है लेकिन मैंने कहा नहीं था। फिर उन्होंने लाइब्रेरी में जाकर सारी पुस्तकें खंगाल ली। सारी कार्यवाहियां देख ली। पर उसमें कहीं दुर्गा नहीं मिला।"

मोदी को राजधर्म की नसीहतः आधा सच

बात 2002 में गुजरात के गोधरा में रेल कोच में कार सेवकों को जलाने की वीभत्स घटना के बाद दंगों की है। दंगों के बाद अटल बिहारी वाजपेयी अहमदाबाद पहुंचे तो पत्रकारों ने पूछा कि क्या वे राज्य के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को कोई सलाह देना चाहते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में वाजपेयी ने कहा था- "राजधर्म" अपनी चिरपरिचित शैली में कुछ थमकर वाजपेयी बोले- "राजधर्म का पालन होना चाहिए।" इसके ठीक बाद वाजपेयी बोले- "उन्हें विश्वास है कि नरेंद्र मोदी अपने राजधर्म का पालन कर रहे हैं।" लेकिन अखबारों ने केवल आधा सच छापा और आज तक वही गलती दोहरा कर भ्रांति फैलाई जा रही हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अटल बिहारी वाजपेयी अच्छे पत्रकार, कवि, प्रखर एवं प्रभावशाली वक्ता और दूरदृष्टा राजनेता थे। उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में अनेक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक कार्य किए। लेकिन कंधार, कारगिल और संसद पर हमले के दौरान अटल वह मजबूती दिखाने में नाकाम रहे जो उन्होंने पोखरण परीक्षण के समय दिखाई थी।

■■

विश्व प्रसिद्ध दर्पण छवि लेखन

आदरणीय अटल बिहारी जी को मेरा नमन मुझे अटल जी से दादरी बस स्टैंड पर मिलने का मौक़ा मिला था और मैंने उनकी पुस्तक" मेरी इक्यावन कवितायें" पर उनके ऑटोग्राफ लिये थे और उसके बाद ईश्वर के आशीर्वाद से उनकी पुस्तक "मेरी इक्यावन कवितायें" दर्पण छवि में लिखा वो भी मैजिक शीट पर और मैं ये दावा करता हूँ ये दुनिया की पहली पुस्तक होगी जिसको हाथ से दर्पण छवि में लिखा गया हैं, इस अनोखी शैली में वो भी किसी प्रधान मंत्री की पुस्तक को।

दोस्तों, मेरे से किसी ने पूछ लिया आपने श्रीमद्भगवदगीता को उल्टा (दर्पण छवि) में लिख दिया इसको पढ़ेगा कौन? मैने जवाब दिया वाल्मीकि जी ने मरा मरा बोला राम राम निकला, संस्कृत भाषा में रामायण लिख दी, मेरा पुरी दुनिया को संदेश हैं दर्पण छवि में लिखी श्रीमद्भगवदगीता को सीधी नहीं तो दर्पण (उल्टे शब्द) में पढ़ लो मेरी जिंदगी बदली हैं तो आपकी भी बदलनी चाहिए, लोग पूछते रहे मैं लिखता गया और 2003 से 2024 तक 18 पुस्तकें हाथ से लिखी गई हैं (ईश्वर के आशीर्वाद से) और दुनिया की पहली सुई से पुस्तक लिखने का सौभाग्य मिला।

विलक्षण प्रतिभाओं के धनी – अटल बिहारी वाजपेयी

जीवन परिचय

उत्तर प्रदेश में आगरा जनपद के प्राचीन स्थान बटेश्वर के मूल निवासी पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी मध्य प्रदेश की ग्वालियर रियासत में अध्यापक थे। वहीं शिंदे की छावनी में अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 को हुआ था। वे एक सम्पन कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुए थे। उनके पिता का नाम पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी और माता का नाम कृष्णा देवी था। उनकी माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। उनकी माताजी को रामायण सहित कई धार्मिक ग्रंथ कंठस्थ थे। वाजपेयी जी तीन भाई एवं तीन बहनें थीं। उनके दादा पं. श्यामलाल वाजपेयी संस्कृत के जाने-माने विद्वान और कथावाचक थे। उनके पिता हिंदी और ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि थे। यही कारण है कि पुत्र में काव्य के गुण वंशानुगत प्राप्त हुए। महात्मा रामचंद्र वीर द्वारा रचित अमर कृति विजय पताका से अटल जी के जीवन की दिशा बदल गयी।

अटल जी अविवाहित थे इसलिए अटल बिहारी वाजपेयी की अपनी कोई संतान नहीं थी, लेकिन उनकी एक गोद ली हुई बेटी है जिनका नाम नमिता भट्टाचार्य है। वे अटल जी के साथ ही रहती थी और उनकी सेवा करती थीं।

अटल बिहारी वाजपेयी के पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित थे, इस कारण उन्हें कई स्थानों पर रहना पड़ता था। लेकिन अटल जी की आरम्भिक शिक्षा 'बड़नगर' के 'गोरखी विद्यालय' में सम्पन्न हुई। बड़नगर में इनके पिता प्रधानाध्यापक के पद पर थे। इस विद्यालय में अटल जी ने आठवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की। वक्ता के रूप में अटल जी को इसी विद्यालय से पहचान प्राप्त हुई थी। जब वह कक्षा पाँच में थे तब पाठ्येतर गतिविधियों के अंतर्गत उन्होंने प्रथम बार भाषण दिया था। इंटरमीडिएट करने के बाद अटल जी ने 'विक्टोरिया कॉलेज' में स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश लिया। स्नातक स्तर की शिक्षा हेतु उन्होंने तीनों विषय भाषा पर आधारित लिए जो संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेज़ी थे। अटल जी की साहित्यिक प्रकृति थी, जिससे वह तीनों भाषाओं के प्रति आकृष्ट हुए।

ग्वालियर की स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद अटल जी कानपुर आ गए ताकि राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त कर सकें। वहाँ उन्होंने एम.ए. तथा एल.एल.बी. में एक साथ प्रवेश लिया। चूंकि स्नातक परीक्षा इन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, इस कारण इन्हें छात्रवृत्ति भी प्राप्त हो रही थी। कानपुर के डी.ए.वी. महाविद्यालय से इन्होंने कला में स्नातकोत्तर उपाधि भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की।

नीलमणि शर्मा
वैशाली, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

भारतीय राजनीति के पितामह

कॉलेज जीवन में ही इन्होंने राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना आरम्भ कर दिया था। शुरू में वह 'छात्र संगठन' से जुड़े। नारायण राव तर्टे ने इन्हें काफ़ी प्रभावित किया, जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख कार्यकर्ता थे। ग्वालियर में रहते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शाखा प्रभारी के रूप में अपने दायित्व निभाए।

भारतीय जनसंघ पार्टी

अटल जी 1939 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के स्वयंसेवक बने। 1951 में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहयोग से 'भारतीय जनसंघ पार्टी' की स्थापना की। इसमें श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी शामिल हुए। वर्ष 1968 से 1973 तक इन्होंने भारतीय जनसंघ पार्टी' के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद सम्भाला। इन्होंने पहली बार लोकसभा का चुनाव वर्ष 1955 में लड़ा लेकिन उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा।

अटल जी इससे बिलकुल भी निराश नहीं हुए और 1957 में दोबारा प्रयास किया और जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में बलरामपुर संसदीय सीट को जीतकर लोकसभा पहुँच गये। एक बार पं. जवाहरलाल नेहरु ने अटल जी के बारे में कहा था कि- यह युवा सांसद प्रधानमंत्री बनने की योग्यता रखता है। आगे चलकर उनकी भविष्यवाणी बिलकुल सही साबित हुई। अपनी काबिलियत और लोकप्रियता के बल पर वे 1957 से 1977 तक लगातार 20 वर्षों तक जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहें। 1975 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने आपातकाल लगाया तब इन्हें भी जेल जाना पड़ा। वे विपक्ष के अन्य नेताओं के साथ 1975 से 1977 तक जेल में रहें।

जनता पार्टी

1977 में आपातकाल की समाप्ति के बाद भारतीय जनसंघ ने कई केन्द्रीय व क्षेत्रीय दलों व समूहों के साथ मिलकर 'जनता पार्टी' की स्थापना की। 1977 में हुए आम चुनाव में जनता पार्टी की विजय हुई और मोरारजी देसाई के नेतृत्व में सरकार बनी। वाजपेयी जी नई दिल्ली लोकसभा सीट से जीते। वे मोरारजी देसाई की सरकार में 1977 से 1979 तक विदेश मंत्री के पद पर रहे। 1977 में बतौर विदेश मंत्री उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी भाषा में भाषण पढ़ा, ऐसा करने वाले वे पहले नेता थे।

अटल बिहारी वाजपेयी के लिए 13 का संयोग :

अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन में 13 का संयोग विख्यात है। कभी ये नम्बर उनके लिए भाग्यशाली रहा तो कभी दुर्भाग्यपूर्ण। 13 नम्बर ने इन्हें पहली बार प्रधानमंत्री के पद पर पहुंचाया। 13 मई 1996 को इन्होंने पहली बार प्रधानमंत्री के पद की शपथ ली थी। लेकिन प्रधानमंत्री बनने के 13 दिनों के बाद ही मात्र 1 वोट के कारण इनकी सरकार अल्पमत में आ गयी थी। बहुमत सिद्ध न कर पाने के कारण उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। 31 मई 1996 में अविश्वास प्रस्ताव पर भाषण के दौरान अटल जी ने कहा था- "देश आज संकटों से घिरा है और ये संकट हमने पैदा नहीं किए हैं। जब-जब आवश्यकता पड़ी संकटों के निराकरण में हमने उस समय की सरकार की मदद की है... सत्ता का खेल तो चलेगा, सरकारें आएंगी-जाएंगी, पार्टियां बनेंगी-बिगड़ेंगी...मगर ये देश रहना चाहिए... इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।"

13 नम्बर के द्वारा ही इन्होंने देश को परमाणु सम्पन्न देश का दर्जा दिला दिया। वाजपेयी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल में 13 मई 1998 को पोखरण में दूसरा परमाणु परीक्षण पूरा किया। 1998 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' (NDA) बनाकर चुनाव में हिस्सा लिया और राजग (NDA) ने बहुमत प्राप्त कर अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री बनाया वर्ष 1999 में अन्ना द्रमुक नेता जयललिता के समर्थन वापस लेने पर 13 महीने में ही वाजपेयी सरकार गिर गयी।

तीसरी बार अटल जी ने 13 राजनीतिक दलों को एकत्र कर अपनी सरकार बनाई। तीसरी बार इन्होंने प्रधानमंत्री के पद की शपथ 13 अक्टूबर 1999 को ली तथा पहली बार अपनी सरकार का 5 वर्ष का कार्यकाल पूरा किया।

28 दिसंबर 2002 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वर्ण जयंती समारोह के उद्घाटन पर उन्होंने कहा- "शिक्षा अपने सही अर्थों में स्वयं की खोज की प्रक्रिया है। यह अपनी प्रतिमा गढ़ने की कला है। यह व्यक्ति को विशिष्ट कौशलों या ज्ञान की किसी विशिष्ट शाखा में ज्यादा प्रशिक्षित नहीं करती, बल्कि उनके छुपे हुए बौद्धिक, कलात्मक और मानवीय क्षमताओं को निखारने में मदद करती है। शिक्षा की परीक्षा इससे है कि यह सीखने या सीखने की योग्यता विकसित करती है कि नहीं, इसका किसी विशेष सूचना को ग्रहण करने से लेना-देना नहीं है। "

उनका चिंतन ऐसा था कि वे भारत का नवनिर्माण करना चाहते थे, जहां पर लोग भूखे न रहें, अनपढ़ न हों, अभाव से मुक्त हों। वे हमेशा दूर की सोचते थे, स्वर्णिम चतुर्भुज योजना उन्हीं की देन है, जिस कारण सड़कों का जाल बिछ गया है। उन्हीं की सोच थी कि एक नदी से दूसरी नदियों को जोड़ा जाए, ताकि कहीं बाढ़, तो कहीं सूखा न हों।

राष्ट्रीय चेतना के शिखर पुरुष

वाजपेयी जी की सरकार ने कई ऐसे अद्भुत और साहसी कदम उठाएं, जिन्हें आज भी हम देशवासी गर्व से याद करते हैं। एक बार पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र के मंच पर भारत को घेरने की एक चाल चली। मानवाधिकार के मंच पर उसने कहा कि- कश्मीर के बिना पाकिस्तान अधूरा है। इसके बाद बड़े तर्कपूर्ण ढंग से अटल जी ने जवाब दिया, यूं तो कोई भी राष्ट्र पूरा नहीं है, आप कहते हैं कि कश्मीर के बिना पाकिस्तान अधूरा है, हम कहते हैं कि पाकिस्तान के बिना भारत अधूरा है, इस संबंध में अपने-अपने विचार हैं।

पड़ोसी के संबंध में

विभिन्न अवसरों पर अटल जी ने कहा कि हम इतिहास बदल सकते हैं, भूगोल नहीं। हम मित्र बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं बदल सकते। अटल बिहारी वाजपेयी जी पूरी वसुधा को अपना कुटुंब मानते थे, तभी तो पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान के प्रति उनका वही भाव था। 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली-लाहौर बस सेवा शुरू की, जिसमें प्रथम यात्री के रूप में अटल जी यात्रा कर स्वयं लाहौर पहुंचे। उन्होंने वहां गवर्नर हाउस में पाकिस्तान के प्रति भारत के संवेदनशील दृष्टिकोण को अपने भावनात्मक भाषण में सम्मिलित किया। उन्होंने इस भाषण में एक कविता सुनाई, जिसका शीर्षक था – जंग न होने देंगे। इस कविता को सुनकर वहां मौजूद पाकिस्तान के लोगों की आंखें नम हो गई थीं। पाकिस्तान के सभी प्रबुद्ध श्रोताओं ने मुक्तकंठ से अटल जी की प्रशंसा की। वहां के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने कहा- अटल जी आप तो पाकिस्तान में भी चुनाव जीत सकते हैं।

मई 2003 को संसद में उन्होंने कहा था- "आप मित्र तो बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं।" 23 जून 2003 को पेकिंग यूनिवर्सिटी में कहा था- "कोई इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता कि अच्छे पड़ोसियों के बीच सही मायने में भाईचारा कायम करने से पहले उन्हें अपनी बाड़ ठीक करनी चाहिए।" 31 जनवरी, 2004 को शांति एवं अहिंसा पर वैश्विक सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान अटल जी ने अपने संबोधन में कहा, "हमें भारत में विरासत के तौर पर एक महान सभ्यता मिली है, जिसका जीवन मंत्र शांति और भाईचारा रहा है। भारत अपने लंबे इतिहास में कभी आक्रांता राष्ट्र, औपनिवेशिक या वर्चस्ववादी नहीं रहा है। आधुनिक समय में हम अपने क्षेत्र एवं दुनिया भर में शांति, मित्रता एवं सहयोग में योगदान के अपने दायित्व के प्रति सजग हैं।"

पोखरण परमाणु परीक्षण – 1998

1998 में जैसे ही राजग (NDA) ने देश की कमान अपने हाथों में ली, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देश को परमाणु हथियार सम्पन्न बनाने के लिए तत्काल परमाणु परीक्षण करने का आदेश दे दिया। भूमिगत तीन सफल परमाणु परीक्षण 11 मई 1998 को किये गये। इसके बाद दो और भूमिगत परमाणु परीक्षण 13 मई को किये गये। ये परीक्षण इतनी गोपनीयता से किये गये थे कि विकसित तकनीकी से परिपूर्ण अमेरिका व अन्य पश्चिमी देश इसका अनुमान भी नहीं लगा पाए थे। इसकी सफलता को शब्द दिया था- बुद्ध मुस्कुराए।

इस साहसिक कदम द्वारा अटल जी ने भारत को विश्व के मानचित्र पर एक बेहद मजबूत वैश्विक शक्ति के रूप में निर्विरोध रूप से खड़ा कर दिया। परमाणु बम के परीक्षण की धमक पूरे विश्व ने सुनी। उस समय शक्तिशाली कहे जाने वाले राष्ट्रों ने दबाव बनाने का भरपूर प्रयास किया, कई प्रतिबंध लगाए गए लेकिन विषय परिस्थितियों में भी उन्होंने पूरे धैर्य के साथ सभी प्रतिबंधों का सामना किया। यद्यपि इंदिरा गाँधी सरकार ने 1974 में पहला परमाणु परीक्षण किया था लेकिन उस समय भारत ने स्वयं को परमाणु हथियार सम्पन्न देश बनने की घोषणा नहीं की थी। इंदिरा गाँधी सरकार ने इस परमाणु परीक्षण को 'शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट' (Peaceful Nuclear Explosions -PNE) कहा था।

कारगिल विजय – ऑपरेशन विजय

फरवरी 1999 में उनकी पाकिस्तान की बस यात्रा को उपमहाद्वीप की लंबित समस्याओं को हल करने के लिए बातचीत के एक नए युग की शुरुआत करने के लिए व्यापक रूप से सराहा गया था। भारत की ईमानदारी ने विश्व समुदाय

पर प्रभाव डाला। बाद में, जब दोस्ती का यह इशारा कारगिल में विश्वासघात के रूप में सामने आया, तो भारतीय भूमि से घुसपैठियों को वापस खदेड़ने में स्थिति को सफलतापूर्वक संभालने के लिए श्री वाजपेयी जी की प्रशंसा भी हुई।

कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में सामरिक महत्त्व की ऊँची चोटियाँ भारत के अधिकार क्षेत्र में आती हैं। उन दुर्गम चोटियों पर शीत ऋतु में रहना काफ़ी कष्टसाध्य होता है। इस कारण भारतीय सेना वहाँ शीत ऋतु में नहीं रहती थी। इसका लाभ उठाकर पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ़ ने आतंकवादियों के साथ पाकिस्तानी सेना को भी कारगिल पर क़ब्ज़ा करने के लिए भेज दिया। लेकिन भारतीय सेना ने अपना मनोबल क़ायम रखते हुए पाकिस्तानी फ़ौज पर आक्रमण कर दिया। इसे 'ऑपरेशन विजय' का नाम दिया गया।

भारतीय सैनिकों ने ठान लिया था कि वे कारगिल से पाकिस्तानियों को खदेड़कर ही दम लेंगे। भारतीय सैनिकों ने विलक्षण वीरता का परिचय देते हुए पाकिस्तानी सैनिकों को चारों ओर से घेर लिया। बेशक़ कारगिल युद्ध में भारत को विजयश्री प्राप्त हुई लेकिन अमेरिका के हस्तक्षेप के कारण भारत सरकार ने पाकिस्तानी सैनिकों को हथियारों सहित निकल भागने का मौक़ा दे दिया। पाकिस्तान को सामरिक महत्त्व की चोटियाँ ख़ाली करनी पड़ीं और भारत ने पाकिस्तानी सैनिकों की ज़िन्दा वापसी को स्वीकार कर लिया।

मानवता और विन्रमता के प्रतिमूर्ति

अटल बिहारी उन चुनंदा नेताओं में से एक हैं, जिन्हें केवल उनकी पार्टी के लोग ही नहीं अपितु समस्त पार्टी के सदस्यगण पूरा भारत देश एवं सारा विश्व एक लोकमान्य नेता मानकर नमन करता है। अटल जी का कहना था– "मेरे प्रभु! मुझे इतनी ऊंचाई न देना, गैरों को गले न लगा सकूं, इतनी रूखाई कभी मत देना।" वे सदा जनता के बीच रहकर उनकी समस्याओं का समाधान करने में विश्वास रखते थे। वे यह मानते थे कि "ऊंचाई पर जैसे पेड़-पौधे भी जीवित नहीं रह पाते, घास भी नहीं उगती, उसी प्रकार विकास भी ऊंचाई पर रहती है, सिर्फ बर्फ, कफन की तरह सफेद और मौत की तरह ठंडी होती हैं। जो विकास जड़ से मजबूत एवं कल्याणकारी हो, उसकी नींव ऊंचाईयों पर नहीं, बल्कि भूतल पर ही रखी जा सकतरी है।"

अटल जी ने खुद को खास विचारधारा के पहरेदार के रूप में स्थापित नहीं होने दिया। तभी तो उन्होंने निर्दोष भारतीयों की रिहाई के लिए उग्रवादियों तक को रिहाई करने में कोई संकोच नहीं किया। कश्मीर में आतंकवादियों से बातचीत के फैसले पर बात उठी कि क्या उनसे बातचीत संविधान के दायरे में है? तो उनका जवाब था– इंसानियत के दायरे में तो है।

गुजरात के दंगों के समय श्री नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री गुजरात के लिए उनका बयान आज भी 'मील का पत्थर है'– मेरा एक संदेश है कि वह राजधर्म का पालन करें। उन्होंने उस दौर का भी प्रतिनिधित्व किया, जब राजनीति अपने वैभव खोकर दलबदल एवं खरीद फरोख्त में फंस गई थी। ऐसे समय में वाजपेयी जी ने 13 दलों की सरकार बनायी, एवं 1998 में 24 दलों की सरकार बनाकर दिखाया कि देश की तरक्की एवं विकास के लिए एक साझा एवं मजबूत सरकार कैसे चलाई जाती है।

उत्कृष्ट वक्ता

अटल जी बचपन से ही भाषण कला में प्रवीण थे। वे अपने शब्दों के ऐसे जाल बुनते थे कि लोग उसमें वशीभूत होकर घंटों सुना करते थे। उनके राजनैतिक विरोधी भी उनको बहुत पसंद करते थे और उनका भाषण बहुत ही धैर्य से सुनते थे। संसद हो या कोई राजनीतिक मंच उनके वक्तव्य को सुनने के लिए सदैव लोग लालायित रहते थे। उनकी प्रखर वाणी ऐसी थी कि एक बार संसद में पं. जवाहरलाल नेहरू ने यह कहा कि आने वाले समय में ये भारत की राजनीति के चमकते सितारे बनेंगे। पं. नेहरू उनसे इतने प्रभावित हुए थे कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री से उनका परिचय कराते हुए नेहरू जी ने कहा– यह युवा हमेशा मेरे विरोध में बोलता है, परंतु मैं इसमें भारत का भविष्य देखता हूँ।

अटल जी एक बेहतरीन वक्ता थे। उनके व्यक्तित्व में विचारों की शक्ति थी। वाणी में ईमानदारी की चाशिनी थी। उनमें अपने विरोधियों को भी साधने की कला थी। वर्ष 1971 में बांग्लादेश के उदय के बाद उन्होंने श्रीमती इंदिरा गांधी की खूब प्रशंसा की। नरसिंहराव जी के कांग्रेस शासन काल में भी विपक्षी दल के नेता होते हुए भी उन्होंने कई विदेशी दौरों में भारत का नेतृत्व किया। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में भारत का पक्ष रखने वाले प्रतिनिधि मंडल की नुमाइंदगी उन्हें सौंपी गई थी। दुनिया ने आश्चर्य किया कि 'कैसे एक विपक्ष का नेता देश का प्रतिनिधित्व कर रहा है।'

अपने संसदीय जीवन में अटल जी अधिकांश समय विपक्ष में ही रहें। विरोधी होने के बावजूद सरकार के अच्छे कार्यों में तथा पाकिस्तान से युद्ध, पोखरण विस्फोट आदि में

सरकार के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर खड़े रहे व संसदीय परम्परा को निभाया। अटल जी की विलक्षण वाकपटुता को देखकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने कहा था कि – इनके कंठ में सरस्वती का वास है। उनका हृदय कवि हृदय था, वे अपने राजनैतिक भाषणों में तथा संसद में सांसदों को अपनी कविता सुना-सुनाकर मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनकी कविताओं में मुख्य रूप से राष्ट्र प्रेम झलकता था। पड़ोसी देश पाकिस्तान के लिए भी उन्होंने लिखा और अमेरिका ने भी उनकी कविताओं को सराहा।

संयुक्त राष्ट्र संघ में

अटल जी का हिंदी भाषा के प्रति प्रेम रग-रग में बसा था। इसकी अभिव्यक्ति उनकी कविताओं, लेखों और भाषणों में मिलती है। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में दिया गया उद्बोधन भला कौन भुला सकता है। जब वे मोरारजी देसाई जी के सरकार में थे, तब उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर नया इतिहास रच दिया था। संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने खड़े होकर तालियां बजाई क्योंकि उनका हिंदी शब्दों का चयन सर्वोत्तम था। उन्होंने पहली बार विश्व मंच पर हिंदी को स्थापित किया। विश्व के देशों को इस संबोधन में उन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम' के आदर्श को स्थापित किया। तमिलनाडु में वर्ष 1962 में हिंदी विरोधी आंदोलन पर उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा– 'देश पहले भाषा बाद में।'

पत्रकार, साहित्यकार एवं कवि हृदय

वर्ष 1943 में वाजपेयी जी कॉलेज यूनियन के सचिव रहे और वर्ष 1944 में उपाध्यक्ष भी बने। शिक्षक पिता की संतान होने के कारण अटल जी शिक्षा का महत्त्व अच्छी तरह से जानते थे। इस कारण पी.एच.डी. करने के लिए वह लखनऊ चले गए और वकालत की पढ़ाई स्थगित कर दी। पढ़ाई के साथ-साथ वह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यों का भी सम्पादन करने लगे।

उन दिनों 'राष्ट्रधर्म' नामक समाचार पत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सम्पादन में लखनऊ से मुद्रित हो रहा था। तब श्री अटल बिहारी वाजपेयी इसके सह-सम्पादक के रूप में नियुक्त किए गए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय इस समाचार पत्र का सम्पादकीय स्वयं लिखते थे और अख़बार का बाकी कार्य अटल जी एवं उनके सहायक करते थे। लेकिन सही मायने में अटल जी ही इसके सम्पादक थे। अटल जी के आने के बाद 'राष्ट्रधर्म' समाचार पत्र का प्रसार काफ़ी बढ़ गया। ऐसे में इसके लिए स्वयं की प्रेस का प्रबन्ध किया गया। इस प्रेस का नाम 'भारत प्रेस' रखा गया था। कुछ समय के बाद 'भारत प्रेस' से मुद्रित होने वाला दूसरा समाचार पत्र 'पाँचजन्य' भी प्रकाशित होने लगा। इस समाचार पत्र का सम्पादन पूर्ण रूप से अटल जी करते थे।

देश आज़ाद हो गया था। कुछ समय के बाद 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या हुई। नाथूराम गोडसे का सम्बन्ध राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से होने के कारण भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को प्रतिबन्धित कर दिया। चूंकि 'भारत प्रेस' भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रभाव क्षेत्र में थी, इसीलिए भारत प्रेस को बन्द कर दिया गया। वे इलाहाबाद चले गए और उन्होंने 'क्राइसिस टाइम्स' नामक अंग्रेज़ी साप्ताहिक के लिए अपनी सेवाएँ देना आरम्भ कर दिया। जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर लगा प्रतिबंध हटा तो वे पुन: लखनऊ लौटे और उनके सम्पादन में 'स्वदेश' नामक दैनिक पत्र निकलना आरम्भ हो गया। थोड़े ही दिनों में जहाँ 'स्वदेश' लोकप्रिय हुआ। अटल जी के सम्पादकीय भी काफ़ी सराहे गए और चर्चा का केन्द्र बनें। परंतु लगातार होने वाली हानि के कारण 'स्वदेश' को बंद कर देना पड़ा।

अटल जी दिल्ली से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र 'वीर अर्जुन' का सम्पादन करने लगे। यह दैनिक एवं साप्ताहिक दोनों आधार पर प्रकाशित हो रहा था। 'वीर अर्जुन' का सम्पादन करते हुए एक पत्रकार के रूप में अटल जी को काफ़ी प्रतिष्ठा और सम्मान मिला। उनकी प्रकाशित रचनाओं में "मेरी संसद यात्रा" (चार खंडों में), मेरी इक्यावन कविताएँ, संकल्प काल, शक्ति-से-शांति, संसद में चार दशक (तीन खंडों में भाषण), 1957-95 शामिल हैं। "लोकसभा में अटल जी" (भाषणों का संग्रह), मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान, कैदी कविराज की कुंडलियां (आपातकाल के दौरान जेल में लिखी गई कविताओं का संग्रह), "भारत की विदेश नीति के नए आयाम" (1977-79 के दौरान विदेश मंत्री के रूप में दिए गए भाषणों का संग्रह), जनसंघ और मुसलमान, "संसद में तीन दशक" (हिन्दी) (संसद में भाषण - 1957-1992 - तीन खंड, और "अमर आग है" (कविता संग्रह) 1994।

कवि हृदय अटल बिहारी वाजपेयी

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। कॉलेज जीवन में उन्होंने कविताओं की रचना करना आरम्भ कर दिया था। उनकी साहित्यिक अभिरुचि उसी समय काफ़ी परवान चढ़ी। उनके कॉलेज में अखिल भारतीय

स्तर के कवि सम्मेलनों का भी आयोजन होता था। इस कारण से कविता की गहराई समझने में इन्हें काफ़ी मदद मिली।

'मेरी इक्यावन कविताएं' अटल जी का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है। इसमें उन्होंने कहा था– 'मेरी कविताएं जंग का ऐलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है।' विख्यात ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एल्बम भी निकाला था। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले थे। उनके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत में अपने समय के जाने-माने कवि थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रगों में काव्य रक्त-रस अनवरत घूमता रहा।

अटल बिहारी वाजपेयी जी ने बहुत कम उम्र में कविता लिखनी शुरू कर दी थी। उन्होंने अपनी जिंदगी की पहली कविता ताजमहल पर लिखी थी। उनकी यह कविता न तो ताजमहल की खूबसूरती पर है और न ही मुमताज के लिए शाहजहां के प्यार पर आधारित है। यह कविता उन श्रमिकों पर आधारित थी, जिन्होंने भव्य इमारत का निर्माण किया था और कहा जाता है कि श्रमिकों के हाथ कटवा दिये गए थे। अटल जी की पहली कविता के कुछ अंश....

'यह ताजमहल, यह ताजमहल
यमुना की रोती धार विकल
कल-कल, चल-चल
जब रोया हिंदुस्तान सकल
तब बन पाया ताजमहल
यह ताजमहल, यह ताजमहल..!!'
कैसा सुंदर अति सुंदरतर...
ताजमहल, यह ताजमहल,
कैसा सुंदर अति सुंदरतर
जब रोया हिंदुस्तान सकल,
तब बन पाया यह ताजमहल।

अटल जी अत्यंत भावुक व निश्चल स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी कविताओं में भावुकता, कोमलता के साथ-साथ प्रखर राष्ट्रवाद भी दिखता है। संघ में रहते हुए किशोरावस्था में रची उनकी कविता– 'हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय।' इतनी ओजस्वी ढंग से सुनाई थी कि संघ की शाखाओं में इस कविता को गाया जाता है।

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!
मैं अखिल विश्व का गुरु महान्, देता विद्या का अमरदान
मैंने दिखलाया मुक्ति-मार्ग, मैंने सिखलाया ब्रह्मज्ञान
मेरे वेदों का ज्ञान अमर, मेरे वेदों की ज्योति प्रखर
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!
होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है कर लूं जग को गुलाम?
मैंने तो सदा सिखाया करना अपने मन को गुलाम
गोपाल-राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किए?
कब दुनिया को हिन्दू करने घर-घर में नरसंहार किए?
कब बतलाए काबुल में जाकर कितनी मस्जिद तोड़ीं?
भूभाग नहीं, शत-शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय

आपातकाल के दौरान जब अटल बिहारी वाजपेयी जेल में थे तब उन्होंने कुछ कविताएं लिखीं थी। इन कविताओं में उन्होंने स्वयं को 'कैदी कविराय' नाम दिया। जेल में लिखी कविताओं में ये भी शामिल थीं –

मौत से ठन गई
ठन गई! मौत से ठन गई!
जूझने का मेरा इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था,
रास्ता रोककर वह खड़ी हो गई,
यूं लगा ज़िन्दगी से बड़ी हो गई।
मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
ज़िन्दगी सिलसिला, आज-कल की नहीं।
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ?
आओ फिर से दिया जलाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ
भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ
हम पड़ाव को समझे मंज़िल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में
आने वाला कल न भुलाएँ।

■■

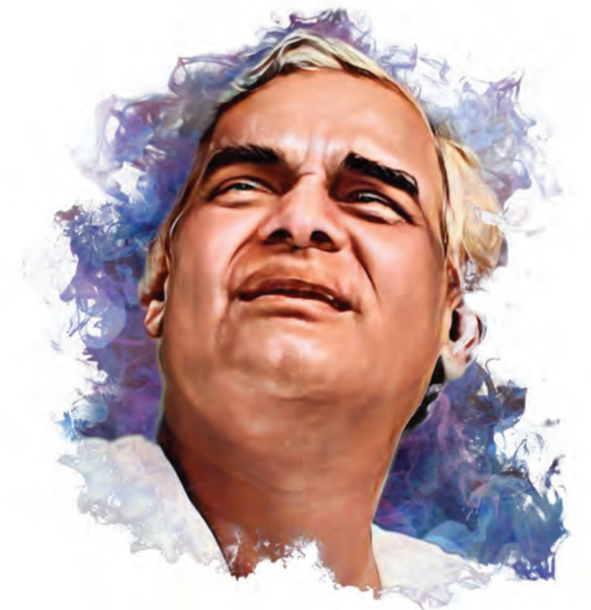

हाँ मैं अटल हूँ

मानवीय स्वभाव की यह आम बात है कि वह अपने नाम को हमेशा के लिए इतिहास में अंकित करना चाहता है, लेकिन यह सौभाग्य कितनों को मिलता है। फिर भी जब भगवान की कृपा से आपको यह अवसर मिले, तो आपके रास्ते में अनेक कठिनाइयां आती हैं, तो कई बार इतने दुश्मन हो जाते है कि समझ नहीं आता कि अपने जीवन को बचाए या अपने मकसद को पाए। फिर भी अगर आपको यह पता चले कि जीवन के निरंतर सफर में आपने सफलता भी प्राप्त की और आपका कोई शत्रु भी नहीं है, तो इस बात पर विश्वास करना थोड़ा मुश्किल है, पर हमारे प्रिय नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इस अपवाद को सच करके दिखाया।

अटल जी एक ऐसी शख़्सियत थे, जिनके बारे में लिखते समय शब्द भी प्रफुल्लित हो रहे हैं। कवि हृदय को लेकर राजनीति के गलियारों में अपना रास्ता बनाने वाले अटल जी ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाएगा या यूँ कहे कि शायद सोचा भी होगा, तभी तो समय काल के हर क्षण को अपने तप और संघर्ष से कुछ ऐसा बनाया जिससे वह एक प्रभावी व्यक्तित्व के साथ-साथ अजातशत्रु भी हुए।

अटल जी निःसंदेह अटल थे, विचारों की स्पष्टता, क्लियर विजन, सुशासन की संकल्पना, देश को न केवल आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ाना बल्कि, सामरिक रूप से परमाणु संपन्न राष्ट्र की कतार में हिंदुस्तान को खड़ा कर वैश्विक महाशक्ति के सामने अपने आपको स्थापित करना। परमाणु परीक्षण के बाद बौखलाए पश्चिमी देशों के आर्थिक प्रतिबंधों के बाद भी अपने अटल निर्णय से अपनी यथा नाम तथा गुण वाली छबि को स्थापित करना साथ ही न केवल वैश्विक मंच पर बल्कि देश की आंतरिक राजनीति में एक निर्विवाद नेता के रूप में स्वीकार्यता, 24 दलों की गठबंधन सरकार का सफल नेतृत्व उनकी अटल छबि का द्योतक है।

भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का जीवन किसी परिचय का मोहताज नहीं है। पर फिर भी हम आज क्यों उनको याद कर रहे हैं, क्या कभी इससे पहले कोई नेता या कवि नहीं हुए तो जवाब हमारे भीतर से ही आएगा कि–

सब हुए बस 'अटल' ही नहीं हुए।
अपने होने की दस्तक
जो अपने जाने के बाद भी
निरंतर देता रहें, वह है 'अटल'।
अपने समय में अपने विरोधियों को भी
अपनी प्रशंसा करने पर विवश कर दे, वह है 'अटल'
जो संकल्पसिद्ध की सामर्थ्य रखता है वह है 'अटल'।

सक्रिय राजनीति में कब आए और कब भारतीय राजनीति को अपना मुरीद बना लिया। इस बात से हम सब भली-भांति परिचित है। यह सब होना इतना आसान नहीं था। एक ऐसा समय भी था, जब उनके साथी संसद में उनके हिन्दी में भाषण देने के खिलाफ थे। पर अटल जी ने मातृभाषा को

अदिति सिंह भदौरिया

उप-संपादक,
द साईलेंट स्ट्रोक

सभी को अपने साथ लेकर चलना था। वह अपने रास्ते की कठिनाइयों को चुनौती की तरह लेते थे। उनकी प्रसिद्ध कविता–

बाधाएँ आती हैं आएं,
घिरे प्रलय की घोर घटाएं
पावों के नीचे अंगार हो
सिर पर बरसे यदि ज्वालाएं
निज हांथों में हँसते-हँसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

न तो इन शब्दों को लिखना आसान है और न ही इन शब्दों के भावों पर चलना आसान है। अगर किसी के मन के भाव कविता के उस रूप को व्यक्त करते है तो समझ जाना चाहिए कि वह इंसान नाम से ही नहीं बल्कि अपनी सोच में भी

अपने सम्मान से जोड़ते हुए उस समय तक ले आए जब उनके भाषण सुनने के लिए विरोधी भी टकटकी लगाए प्रतीक्षा करते थे। अपने भाषणों के अतिरिक्त अपनी मुखरता के लिए भी अटल जी को जाना जाता था। अटल जी एक ऐसे शख्स थे, जिनका ध्येय कभी, किसी को नीचा दिखाना नहीं था, वरन

अटल है।

राजनीति में आने के बाद उनका यह दृढ़ निश्चय रहा कि वह मात्र एक नेता न बनकर एक जननायक हैं और इसके लिए उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार सम्भालते हुए, भारत की गलियों में घूमते हुए देश सेवा की

भावना को जगाने के साथ-साथ आने वाले कल के सुनहरे भविष्य की आस को भी थामें रखा। उनके शब्दों में–

हम पडाव को मंजिल समझें
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में
आने वाला कल ना भुलाएं
आओ फिर से दिया जलाएं।

वह कोमल हदय के मालिक होने के साथ-साथ दूरदर्शी भी थे। वे जानते थे कि आने वाला समय भारत का विश्वगुरु बनने का है। लेकिन वह मात्र सपनों के भरोसे अपने भविष्य की योजनाएं नहीं बनाते थे। पोखरण का फैसला विपरीत काल में लिया गया एक गम्भीर फैसला था। भारत उस समय विश्व स्तर पर कई कठिनाइयों का सामना कर रहा था। अटल जी ने अपनी सूझ-बूझ और निश्चयात्मिका बुद्धि का परिचय देते हुए एक साहसिक फैसला लिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि जो पहले भारत को कमजोर मानने की गलतफहमी पाले हुए थे, उनको बिना कुछ बोले ही एक करारा जवाब मिला। उस समय अमेरिका ने अटल जी के इस फैसले को अपनी चूक तो बताया लेकिन साथ ही उनकी सराहना भी करते हुए भारत को उभरता हुआ ताकतवर देश भी स्वीकार किया था।

अटल जी में देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। वह मानते थे कि इस पावन धरती का कण-कण शंकर है और बिंदु-बिंदु गंगाजल है। वह भारत के भीतर पनप रहें कलह और जातिवाद से परेशान थे। वह जानते थे कि भारत एक कृषि देश है, वह सबके जीवन में अपनी राजनैतिक योजनाओं का लाभ पहुंचाना चाहते थे। देश के भीतरी हालातों की चिंता जब उनकी कलम से झलकती थी तो शब्द भी नम पड़ जाते थे। उनका कहना है–

आज़ादी का दिन मना,
नई गुलामी बीच
सूखी धरती, सूना अम्बर
मन-आँगन में कीच
कमल सारे मुरझाए
एक-एक कर बुझे दीप
अंधियारे छाए
कह कैदी कबिराए
न अपना छोटा जी कर
चीर निशा का वक्ष
पुनः चमकेगा दिनकर।

सेना पर अपना अटूट स्नेह दिखाते हुए वह कभी भी किसी भी तरह के युद्ध के पक्ष में नहीं थे। लेकिन वह अपनी सेना को कमजोर भी नहीं समझते थे। उनके हौसले के कारण जब कारगिल का युद्ध जीता गया, तब उन्होंने उस जीत का पूरा श्रेय सेना को ही दिया। पर शहीदों का नाम लेकर ही उनका कोमल हदय छलनी हो जाता। और वह कह उठते हैं–

रंक को तो रोना होगा
खून क्यों सफेद हो गया?
भेद में अभेद खो गया
बंट गए शहीद, गीत कट गए
कलेजे में कटार गड़ गई
दूध में दरार पड़ गई।

भारत में फ़ैल रही जात-पात की राजनीति के वह सख्त खिलाफ थे। वह अपने धर्म को निष्ठा से मानते हुए हमेशा सौहार्द का ही संदेश देते थे। उनकी कुछ पंक्तियाँ आज की सच्चाई है–

होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है, कर लूँ जग को गुलाम
मैंने तो सदा सिखाया करना अपने मन को गुलाम।
गोपाल-राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किया,
कब दुनिया को हिन्दू करने घर-घर नरसंहार किया।

अपने देश और अपने धर्म को हमेशा अपने स्वाभिमान से जोड़ते हुए एक अजातशत्रु बनकर भारतीय राजनीति के चमकते सितारे थे, हमारे अटल जी।

मेरे शब्दों में इतनी ताकत कहां कि एक सशक्त व्यक्तित्व के बारे में लिख पाऊं, पर फिर भी भावनाओं की स्याही जब भी कुछ आकार बनाएगी, तब यही आवाज़ आएगी कि–

कितना भी सूरज को रोके कोई रोशनी को ना ढक पाएंगे
कितने भी नेता आए कोई 'अटल' नहीं बन पाएंगे।

अटल एक नाम नहीं बल्कि अहसास है। उनमें श्रीकृष्ण जैसी राजनीतिक कुशलता और चाणक्य जैसी बुद्धि थी। उतने ही एक कोमल मन के स्वामी 'अटल बिहारी वाजपेयी।' अपने शब्दों को विराम देते हुए बस इतना ही कहना चाहूंगी कि– जिनके बारे में लिखकर स्वयं शब्द भी अभिमान महसूस करें उन विचारों और भावों से अटल जी आज और आगामी हर युग में भारत के नेता से ज्यादा हमारे मार्गदर्शक बनकर अमर रहेंगे, क्योकि अटल कभी मरते नहीं, वह तो ज़िंदा रहते है आने वाले कई सदियों में इतिहास बनकर, इतिहास बनाने के लिए।

■■

NAVIGATING THE DIGITAL GENERATION:

Challenges and Opportunities for Today's Youth

TRIPTI ARORA

FARIDABAD, HARYANA

It is no secret that the world we inhabit today comprises numerous individuals engaged in a multitude of activities. What distinguishes this era from earlier generations is that these activities transcend the boundaries of our individual spheres, amalgamating on a global platform that connects us to everything with just a single click. What we possess today is grander and more meaningful than our current comprehension allows, with far-reaching repercussions that we are still in the process of grappling with. Technology and digital presence has enabled a vast array of endless opportunities and the greater the exposure to this virtual world, the greater the ability to grasp such opportunities. In this context, it is the youth of today, the new age "Gen-Z" and beyond, that are most accustomed to the utilisation of such digital media and social media platforms. What it means as a young person to be able to dive into this realm of knowledge is a dynamic argument that is important to understand to be able to recognise the changing trends in human development. Technology and the virtual world are ever-expanding. Within this realm, two primary facets emerge: one of information and one of misinformation.

The former revolves around utilizing the internet as a tool for learning, communication, and connecting with a reality beyond our immediate surroundings. It serves as an educational resource that breaks down the barriers of distance. Consider how today's children grasp English more swiftly by watching sitcoms on television than by reading textbooks. Moreover, contemplate how delayed our understanding of the Covid crisis—its symptoms and remedies—would have been without the internet furnishing comprehensive details. We've become so reliant on immediate access to knowledge that it seems we've forgotten how to function without it.

On the other hand, misinformation takes on a variety of forms. This might include the influence of fictional worlds crafted within this domain through video games, OTT platforms, and other means. It also encompasses the deliberate distortion of truth, which paints a skewed picture of the world as we recognize it. This distortion pertains not only to the presentation of reality but also to our interpretation of the content presented to us.

As humans grapple with the influx of information, the process can prove detrimental. Younger, more impressionable minds may struggle to navigate their surroundings without feeling overwhelmed. A robust digital presence also exposes individuals to threats like cyberbullying, social isolation, and information overload. Anxiety levels rise when immediate replies to texts are absent, when a chosen movie does not start promptly, or, worst of all, when the internet disconnects us from the world, leaving us fearful of missing out.

Youth is a time where we make a lot of mistakes, a time where we are supposed to be learners and engage in trial and error to be able to bring out the best version of ourselves. Having such a crucial stage of our lives in a world where our entire existence can be made public voluntarily, we have to be careful of what activities we engage in and their long term impact on our well-beings. As we navigate through this time, we must remember that not everything we see is true, and most things in life are temporary. It is not the end of the world if a picture you post does not get many likes, if your friend does not text you back within seconds or if the internet shuts down for a night. It is essential to regain our lost patience and learn to take things one step at a time. The addiction to speed can be fatal not only to you but to those around you as well. It is okay to not know the answer most of the time, but to what extent will you go to be able to find it?

■■

अटल बिहारी वाजपेयी
एक अष्टपैलू व्यक्तित्व

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी देश के पूर्व प्रधानमंत्री, उत्कृष्ट सांसद, हिंदी कवि, साहित्यकार, पत्रकार और प्रखर वक्ता थे। उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री, संसद की विभिन्न महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष और विपक्ष के नेता के रूप में आजादी के बाद भारत की घेरलू और विदेश नीति को आकार देने में एक सक्रिय भूमिका निभाई थी। वे स्वतंत्रता से पूर्व वर्ष 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का भी हिस्सा रहे थे जिसने ब्रिटिश हुकूमत के शासन को अंत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए थे। वर्ष 1998 में पोखरण में पांच भूमिगत 'परमाणु परीक्षण' और पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने के उद्देश्य से वर्ष 1999 में सदा-ए-सरहद (दिल्ली-लाहौर बस) नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा चलाने का ऐलान किया था। वहीं उनके नेतृत्व में ही 'कारगिल युद्ध' में भारतीय सेना ने पाक के अवैध कब्जे से अपनी भूमि को छुड़ाया था। अटल बिहारी वाजपेयी को चार दशकों से अधिक समय तक देश और समाज की सेवा करने के लिए वर्ष 2015 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' से नवाजा गया था। इसके साथ ही उन्हें वर्ष 1992 में पद्म विभूषण वर्ष 1994 'लोकमान्य तिलक पुरस्कार' और बांग्ला देश सरकार की तरफ से 'मुक्ति युद्ध सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका हैं। इस वर्ष 25 दिसंबर 2024 को अटल बिहारी वाजपेयी की सौवीं जन्मशताब्दी (Birth Anniversary) मनाई जाएगी।

'अटल बिहारी वाजपेयी' जी का व्यक्तित्व

माननीय अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर, 1925 को उत्तर प्रदेश में आगरा जनपद के बटेश्वर के मूल निवासी पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी के घर शिंदे की छावनी, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इनकी माताजी का नाम 'कृष्णा देवी' था। अटल जी अपने परिवार की सातवीं संतान थे, जो आजन्म अविवाहित रहें । अटल जी की स्नातक तक की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई महाविद्यालय) में हुई। कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज से राजनीतिशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने अपने पिताजी के साथ कानपुर रहकर एल.एल.बी. का अध्ययन प्रारम्भ किया, जिसे बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा के साथ सामाजिक कार्य में जुट गये। अटल जी राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में छात्र-जीवन से ही भाग लेते रहे हैं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ-साथ पांचजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-

डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड

पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलतापूर्वक किया। एक कुशल एवं सशक्त सम्पादक के रूप में अटल जी को प्रतिभा सर्वमान्य एवं सर्वव्यापी प्रसिद्धि हुई। अटल जी में कवित्व के गुण वंशानुगत प्राप्त हुए थे। वे हिन्दी के सिद्ध कवि के रूप में प्रख्यात हैं। 'मेरी 51 कविताएँ' अटल जी का प्रसिद्ध काव्य संग्रह है। राजनीति के साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता उनकी कविताओं में प्रकट होती रही हैं । उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आंदोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति पायी है।

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने हिमालय को 'साकार दिव्य गौरव विराट' कहकर काव्यांजलि दी है। अटल जी का व्यक्तित्व भी हिमालय के उसी स्वरुप की भांति था। वे एक सफल नेता थे, जिनमें राजनीति के तमाम गुण मौजूद थे। भारतीय राजनीति में एक से बढ़कर एक नेता हुए जो अपने गुणों के कारण अमर हुए और आज भी अपनी पहचान बनाये हुए हैं। अटल जी का राजनैतिक जीवन भारतीय जनसंघ की स्थापना से प्रारम्भ हुआ। वर्ष 1968 से 1973 तक वे इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वर्ष 1952 में लोकसभा चुनाव में असफल रहे परंतु वर्ष 1957 में बलरामपुर (उत्तर प्रदेश) से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में विजयी होकर प्रथम बार लोकसभा में पहुँचे। अटल जी पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर भारत को गौरवान्वित किया। वर्ष 1980 में 'भारतीय जनता पार्टी' में शामिल हुए। लोकतंत्र के सजग प्रहरी अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत संघ के ग्यारहवें प्रधानमंत्री के रूप में 16 मई 1996 में देश की बागडोर संभाली। जो एक सफल राजनेता के साथ-साथ एक संवेदनशील कवि के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में चर्चित रहें ।

'अटल बिहारी वाजपेयी' जी का कृतित्व

अटल जी की हिंदी साहित्य सेवा को देखने पर हम उन्हें एक मानवतावादी संवेदनशील कवि के रूप में पाते हैं। उनकी 'मेरी 51 कविताएँ' नामक काव्य संग्रह प्रकाशित है, जिसमें 'ताजमहल', 'रग-रग हिन्दू मेरा परिचय', 'मृत्यु या हत्या', 'अमर बलिदान', 'संसद में तीन दशक' आदि कविताएँ संकलित है। एक महान अष्टपैलु व्यक्तित्व रखने वाले अटल बिहारी वाजपेयी जी की विचारधारा को युवाओं तक पहुँचाना चाहिए इस उद्देश्य से हमारे 'स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड, महाराष्ट्र' ने NEP के अंतर्गत नवीन पाठ्यक्रम 'नई शिक्षा नीति- 2020 के अंतर्गत स्नातक प्रथम वर्ष के ऐच्छिक हिन्दी का पेपर 'आधुनिक हिन्दी कविता' के पाठ्यक्रम में अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता 'गीत नया गाता हूँ...' को रखा है। हमने इस कविता को पाठ्यक्रम में रखा क्योंकि यह कविता नवयुवाओं में एक सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। कविता बहुत छोटी है पर अत्यंत ही प्रभावशाली है–

गीत नया गाता हूँ
टूटे तारों से फूटे बासंती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ
हार नहीं मानूंगा
रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ...।

इस कविता के माध्यम से अटल जी युवाओं को कठिन-से-कठिन समस्याओं के विरुद्ध स्वयं को प्रेरित करने का संदेश देते है। जहाँ हर प्रकार की सकारात्मकताओं के साथ जीवनयापन, नये उत्साह, प्रेरणा के साथ नये जीवन के आरम्भ का मौलिक संदेश देते हैं। जो आज की निराशा और घुटन भरे वातावरण के लिए अत्यंत ही प्रासंगिक है। आज युवा पीढ़ी के लिए यह कविता एक अमृततुल्य वरदान के समान है। जिसे पढ़कर आज के छात्र और युवक कुछ-न-कुछ सकारात्मक विचार कर सकेंगे तथा जीवन के प्रति आशावादी बन सकेंगे।

संदर्भ सूची :

1. आधुनिक हिंदी काव्य – (सम्पा) डॉ. शेख रज़िया शहेनाज, पृ. 59
2. leverageedu.com
3. ataljyoti.com

■■

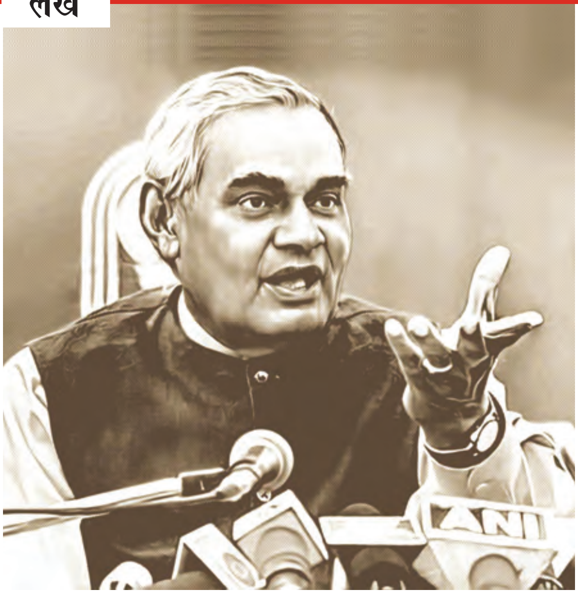

राजनीति के सफल पुरोधाः अटल बिहारी वाजपेयी

अटल पथ के महान राजनेता थे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी। वे एक पढ़े-लिखे राजनेता, कुशल वक्ता और साहित्यिक विचारधारा के राजनेता थे । उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में तीन बार कार्य किया था। उन्होंने देश और समाज के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया । उनके अंदर समर्पण का भाव था। राष्ट्र की उन्नति के लिए उन्होंने सदैव अपना मूल्यवान समय दिया। वाजपेयी जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वे पहले सफल गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने 6 वर्षों तक देश पर शासन किया। विपक्ष में रहते हुए वे संयुक्त राष्ट्र संघ में शामिल हुए, वहां हिंदी का परचम लहराया। उनका पहला कार्यकाल वर्ष 1996 में मात्र 13 दिनों का रहा, तत्पश्चात 1998 से 2004 तक उनका कार्यकाल मील का पत्थर साबित हुआ।

वर्ष 1998 अटल जी के कार्यकाल में परमाणु परीक्षण हुआ और भारत परमाणु शक्ति के रूप में जाना गया। वर्ष 1999 में सर्वप्रथम भारत पाकिस्तान के रिश्तों को सुधारने के लिए सर्वप्रथम लाहौर-पाकिस्तान की बस सेवा शुरु की गई। वर्ष 2001 में सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत कर प्रधानमंत्री ने देश के 6 से 14 वर्ष के वंचित बच्चों के लिए नि:शुल्क शिक्षा का प्रावधान किया । राजनीति से दूरी बनाने के बाद उन्होंने राष्ट्र धर्म, पाञ्चजन्य और वीर अर्जुन का संपादन किया। अटल जी अपनी कार्य-कुशलता से एक वरिष्ठ पत्रकार का भी परिचय दिया था । अटल जी काशी से प्रकाशित "चेतना" पत्रिका के संपादक रहे व प्रखर वक्ता थे। उनके भाषण कला पर नेहरु और इंदिरा गांधी जैसे लोग फिदा थे।

उन्होंने हिंदुत्ववादी नेता होते हुए भी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की कल्पना की। गुजरात में गोधरा कांड हुआ उस समय अटल जी भारत के प्रधानमंत्री थे और गुजरात में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वहां के मुख्यमंत्री के रूप में थे। जब उनसे पत्रकारों ने पूछा कि मुख्यमंत्री को क्या करना चाहिए तो अटल जी ने जवाब दिया कि उन्हें अपना राजधर्म निभाना चाहिए। बिना किसी हिंदुत्ववादी ताकतों के दबाव में आए, उन्होंने जो कार्यकाल पूरा किया उसे भारतीय राजनीति का स्वर्णकाल कहा गया। अटल जी की इसी विद्वता के कारण उन्हें 27 मार्च 2015 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने उनके आवास पर जाकर भारत रत्न की उपाधि दी।

एक कवि और रचनाकार के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी की छवि उनकी विद्वता और राजनीति में चार चांद लगाते थे। उनके प्रमुख रचना संग्रह इस प्रकार हैं-मेरी इक्यावन कविताएं, संघर्ष के बादल छटेंगे, हार नहीं मानूंगा रार नहीं ठानूंगा, गीत नया गाता हूं, काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूं। इस प्रकार अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री रहते हुए अपनी सहज प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया। जो एक प्रधानमंत्री के रूप में उन्हें शोभा देता था।

वर्ष 2018 में उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में अपने जीवन की अंतिम सांस ली। ■■

मनोज कौशल

रोहतास, बिहार

राजनीति के अजातशत्रु

अनिल सोनी
इंदौर, मध्य प्रदेश

वे सिर्फ कहने भर को कवि, गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार, राजनेता अथा प्रखर वक्ता नहीं थे। वे केवल दिखावे के विद्वान, चिंतक व विचारक भी नहीं थे, वे भारतीय राजनीति के ऐसे राष्ट्रधर्म राजनेता थे, जिन्होंने राजनीति में मूल्यों और आदर्शों की स्थापना की । वे वैरागी वृत्ति के संत थे, जिनमें सम और विषम परिस्थितियों में काम करने की अद्भुत क्षमता थी। यही कारण था कि धुर विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। उनकी राजनैतिक शैली परिष्कृत और मर्यादित थी। यही कारण था कि राजनैतिक मतान्तर होने के बाद भी वर्ष 1994 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी.नरसिम्हा राव ने अटल जी को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के लिए भेजे गये प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी। नेहरू से लेकर मनमोहन तक सभी प्रधानमंत्रियों ने उन्हें पूरा सम्मान दिया ।संसद में उनके भाषणों पर विपक्षी सांसद भी मेज थपथपाने पर मजबूर हो जाते थे ।

अटल जी अन्य राजनेतओं से इस मायने में अलग थे कि वे मूलत: कवि और साहित्यकार थे । उनका कवि सदैव उनके राजनेता के बगल में खड़ा रहता था। "राजनीति की रपटीली राहें" पुस्तक में अपने एक साक्षात्कार में वे कहते हैं– "जब कोई साहित्यकार राजनीति करेगा तो वह अधिक परिष्कृत होगा। यदि राजनेता की पृष्ठभूमि साहित्यिक है तो वह मानवीय संवेदनाओं को नकार नहीं सकता... एक

साहित्यकार का हृदय दया, क्षमा, करुणा और प्रेम से आपूरित रहता है।"

अटल जी के जीवन दर्शन को देखें तो उनके पारदर्शी व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू प्रकाश में आते हैं, कहीं वे अत्यंत सरल हो जाते हैं, तो कहीं अत्यधिक गंभीर, कहीं राजनीति की काली कमली को छोड़ने की बात करते हैं तो कहीं सामाजिक एवं राजनैतिक विद्रूपताओं को उखाड़ फेंकने का उद्घोष करते हैं। यही कारण था कि भारतीय राजनीति में आज तक कोई उनका शत्रु नहीं बन सका। उन्होंने एक स्थान पर कहा है कि– मेरे भाषणों में मेरा लेखक ही बोलता है पर ऐसा नहीं की राजनेता मौन रहता है। वास्तव में उनका लेखक, राजनेता को वाक्संयम की मर्यादा में बांध देता है और राजनेता अपने भाषण में लेखकीय अनुशासन का पूरा ध्यान रखता है, यही संयम और संतुलन उन्हें अन्य राजनेताओं की जमात से अलग खड़ा करता है।

आप जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे। कालांतर में चार दशकों तक जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे। वे संसद के सदस्य भी रहे और भारत के दसवें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। अटल जी तीन बार प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने 24 दलों के गठबंधन की सरकार को भी बखूबी चलाया क्योंकि वे निःसंदेह राजनीति के अजातशत्रु थे। यही कारण था कि उनके नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर अपनी धाक जमाई। 11 और 13 मई 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद भारत निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ़ परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र के रूप में स्थापित हो गया, जिसके परिणामस्वरूप भले ही पश्चिमी देशों ने भारत पर कई प्रतिबंध लगा दिये लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए भारत को आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर किया।

अटल जी ने भूख, भय और भ्रष्टाचार मुक्त भारत की कल्पना को मूर्तरूप देने का प्रयास किया, वे शासन करने पर नहीं वरन् सुशासन पर विश्वास रखते थे। उनके केंद्र में आम आदमी था, उसके दर्द, पीड़ा और गरीबी को दूर करने की दिशा में उन्होंने ग्रामीण रोजगार सृजन पर विशेष बल दिया।

आज हम अटल जी की जन्म शताब्दी मना रहे हैं इस अवसर पर हम उनके जीवन दर्शन और उनके सिद्धांतों को समझे और आत्मसात करें और अंत में उनकी आह्वान की पंक्तियाँ–

भरी दुपहरी में अंधियारा
सूरज परछाई से हारा
अन्तरतम् का नेह निचोड़ें
बुझी हुई बाती सुलंगाएं
आओ फिर से दिया जलाएं।

■■

'दुनिया में कोई भी शाश्वत और अपरिवर्तनीय नियम या धार्मिक सत्य नहीं है। ये सभी इसी ठोस समाज की रचनाएँ हैं। धर्म की राजनीति करने वाली कुटिल ताकतों को विवश होकर अपने पांव समेटने ही होंगे।'

–राहुल सांकृत्यायन

'जीतने से पहले जीत और हारने से पहले हार कभी नहीं माननी चाहिए'

–स्वामी विवेकानन्द

प्रेमी, पागल और कवि एक ही चीज से बने होते हैं और देशभक्तों को अक्सर लोग पागल कहते हैं।

–भगत सिंह

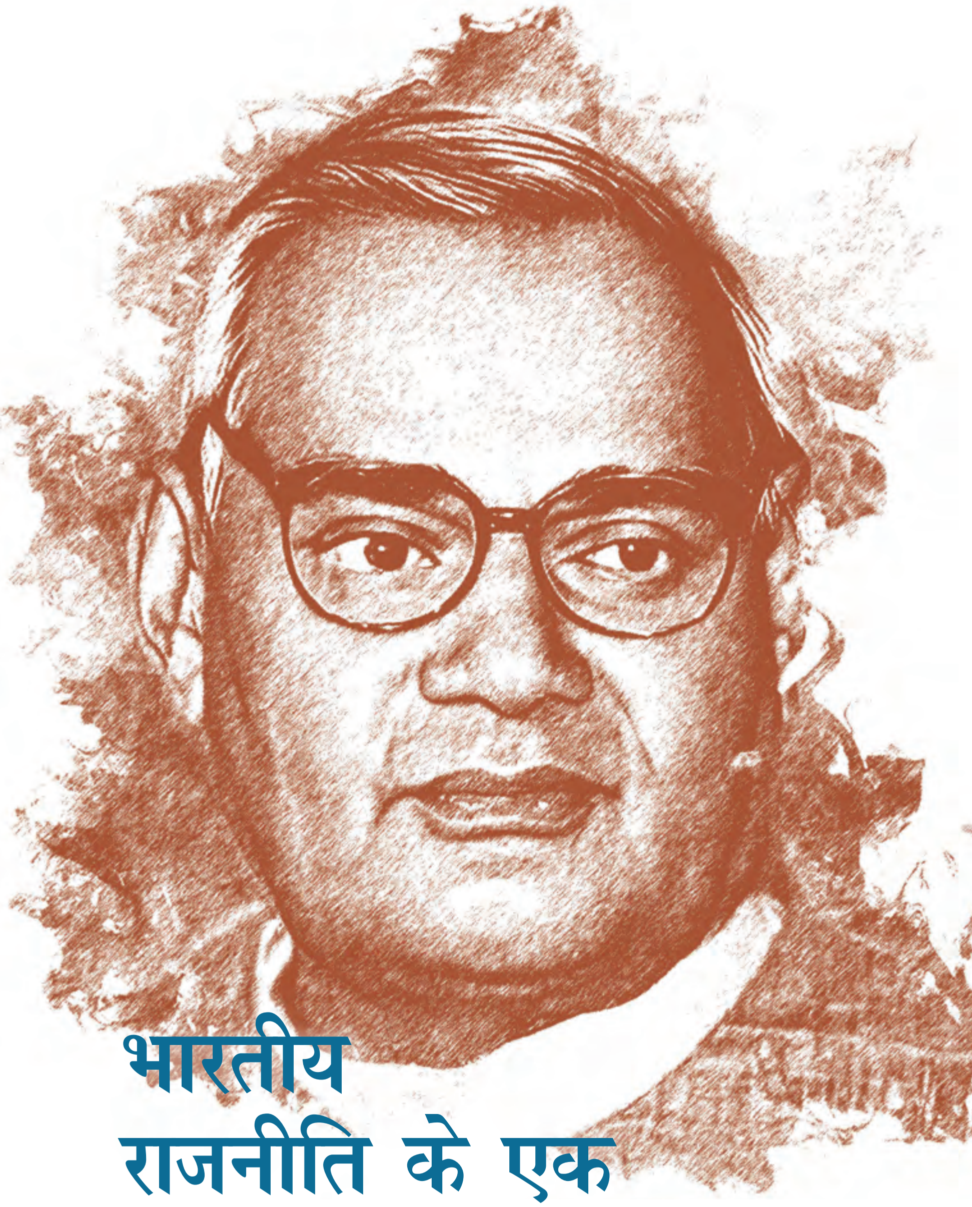

भारतीय राजनीति के एक युग का अंत...

जो जिया हो भारत-भारती के लिए, जिसने ताउम्र केवल राष्ट्र जिया, कविता के शब्दों से संसद के गर्भगृह को सुशोभित किया हो, पोखरण परमाणु परीक्षण से विश्व को भारत की शक्ति का आभास कराया, कारगिल युद्ध से पाकिस्तान को औकात दिखाई हो, स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना से राष्ट्र को जोड़ा हो, कावेरी जल विवाद को सुलझाने वाले, केन्द्रीय विद्युत नियामक आयोग का गठन करने वाले दूसरे कोई नहीं बल्कि पंडित अटल बिहारी वाजपेयी ही है।

शिन्दे की छावनी में 25 दिसम्बर 1924 को ब्रह्ममुहूर्त में कृष्ण बिहारी वाजपेयी की सहधर्मिणी कृष्णा वाजपेयी की कोख से जन्मे भारत के रत्न पंडित अटल बिहारी जी एक ऐसी शख्सियत रहे, जिनका लोहा स्वयं के दल के अतिरिक्त विपक्षी भी मानते रहें । अटल जी के पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापन कार्य तो करते ही थे इसके अतिरिक्त वे हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्वहस्त कवि भी थे। पुत्र में काव्य के गुण वंशानुगत परिपाटी से प्राप्त हुए। महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति "विजय पताका" पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई कॉलेज) में हुई। छात्र जीवन से वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहें। कानपुर के डी.ए.वी.

डॉ. अर्पण जैन, 'अविचल'
इंदौर, मध्य प्रदेश

कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने अपने पिताजी के साथ कानपुर में ही एल.एल.बी. की पढ़ाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा से संघ के कार्य में जुट गये। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ-साथ पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलता पूर्वक करते रहे।

अटल जी 16 मई से 1 जून 1996 तथा फिर 19 मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। वे हिन्दी कवि, पत्रकार व प्रखर वक्ता भी थे। वे भारतीय जनसंघ की स्थापना करने वाले महापुरुषों में से एक हैं और 1968 से 1973 तक उसके अध्यक्ष भी रहे। वे जीवन भर भारतीय राजनीति में सक्रिय रहे। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर प्रारम्भ किया था और देश के सर्वोच्च पद पर पहुँचने तक उस संकल्प को पूरी निष्ठा से निभाया। वाजपेयी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री पद के 5 साल बिना किसी समस्या के पूरे किए। उन्होंने 24 दलों के गठबंधन से सरकार बनाई थी जिसमें 81 मन्त्री थे। कभी किसी दल ने आनाकानी नहीं की। इससे उनकी नेतृत्व क्षमता का पता चलता है।

अटल जी की विलक्षण प्रतिभा का लोहा तो विपक्ष ने भी सदा माना है और इसी के चलते लोह महिला इंदिरा गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में अटल जी को विदेश मंत्रालय का दायित्व भी दिया। प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी कार्यकाल में भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बना जिसमें अटल सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ़ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीकी से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊचाईयों को छुआ।

इसके साथ ही पाकिस्तान से संबंधों में सुधार की पहल भी की। 19 फ़रवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरु की। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में इन्होंने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज़ शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नयी शुरुआत की। कारगिल युद्ध भी यह राष्ट्र कभी नहीं भूल सकता बस सेवा चलने के कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतर्राष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया। इस युद्ध में प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण भारतीय सेना को जान-माल का काफी नुकसान हुआ और पाकिस्तान के साथ शुरु किए गए संबंध सुधार एक बार फिर शून्य हो गए। साथ ही स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना से सुशोभित राष्ट्र को अटल जी ने एक अद्भुत परियोजना दी जिसने भारत भर के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (अंगरेजी में- गोल्डन क्वाड्रिलेट्रल प्रोजैक्ट या संक्षेप में जी.क्यू. प्रोजैक्ट) की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया। ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ इतना केवल शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। इन सब के बाद भी अटल जी एक उदारमना, कवि हृदय पत्रकार रहे, जिन्होंने पंद्रह अगस्त, 'मेरी इक्यावन कविताएँ' जैसी कृतियों के माध्यम से समाज को जागरूक किया। हाँ विधि का लिखा कोई टाल नहीं सकता, इसी काल के करतब के आगे नतमस्तक होकर अहर्निश हिंदी सेवक जिसके कारण संयुक्त राष्ट्र में हिंदी की चर्चा शुरु हो सकी, ऐसे महापुरुष के शरीर को विदाई देता है। अटल जी का जाना भारतीय राजनीति के उस युग का अवसान माना जाएगा जिसने गठबंधन की इबारत लिखी।

■■

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ बिताए वो दो घंटे

संध्या राय चौधरी
इंदौर, मध्य प्रदेश

'आकाश-सी अनंत ऊँचाइयों वाले विराट व्यक्तित्व, वटवृक्ष, एक संपूर्ण अद्भुत नाम आदरणीय श्रद्धेय श्री अटल बिहारी जी के साथ बिताए हुए पूरे दो घंटे मेरी अमूल्य निधि, अविस्मरणीय क्षण हैं जो मानस पटल पर सदैव अंकित रहेंगे।'

बात 1992 की है। मैं इंदौर से प्रकाशित दैनिक चौथा संसार में फीचर डेस्क पर कार्यरत थी। हमारे संपादक ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात साहित्यकार डॉ. नरेश मेहता जी थे। मेहता जी भी एक असाधारण नाम, वे शाम को दो घंटे के लिए आते थे। संपादकीय लिखने के बाद मुझे और संपादकीय डेस्क की एक साथी को चाय पिलाते थे। उसी दौरान एक दिन टेली प्रिंटर पर खबर आई कि श्री नरेश मेहता जी को साहित्य का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ दिया जाएगा। उसके बाद अख़बार के दफ़्तर में ज़बरदस्त खुशी का माहौल बन गया। तब एक साथी पत्रकार ने कहा आज तो मेहता सर से कहेंगे हम सबको भी चाय पिलाइए, सिर्फ़ मैडम को नहीं। ख़ैर...!

मैनेजमेंट ने निर्णय लिया कि डॉ. मेहता जी का सम्मान समारोह किया जाएगा जिसमें अटल बिहारी वाजपेयी जी को आमंत्रित किया जाएगा। कार्यक्रम की ज़ोर-शोर से तैयारियाँ शुरु हो गईं। कार्यक्रम में श्रद्धेय अटल जी आए, आदरणीय नरेश मेहता जी का सम्मान समारोह अत्यंत गरिमामय हुआ। उसके बाद एक होटल में डिनर की व्यवस्था की गई। श्रद्धेय अटल जी आए, हम लोग भी वहीं

अटल जी के साथ संध्या राय चौधरी

थे। मेहता सर ने कहा मोहरतरमा जी (मुझे वो यही कहते थे) आपको अटल जी से मिलवाते हैं। मेरे लिए तो जैसे मुंहमांगी मुराद मुझे मिल गईं। कभी सपने में भी ख्याल नहीं आया था कि मैं विश्व के प्रभावशाली व्यक्तित्व से इतनी सरलता से इतने क़रीब से रूबरू मिल पाऊँगी।

आदरणीय मेहता सर ने मेरा परिचय विराट व्यक्तित्व श्री अटल बिहारी वाजपेयी से करवाया। साधारण कुर्ता-धोती और चप्पल उनकी वेशभूषा थी। उनके चरण स्पर्श किए तो बगल वाली कुर्सी की तरफ़ इशारा करके बोले यहाँ बैठो। स्वाभाविक रूप से उनके आस-पास कई लोग बैठे थे, लेकिन उन्होंने मुझसे बहुत बातें की। लगभग डेढ़-दो घंटे मेरी उनसे बातचीत हुई। पूछा क्या करती हो! मैंने कहा चौथा संसार में पत्रकार हूँ। थोड़े मुस्कुराए बोले– 'एक बात कहता हूँ पत्रकारिता छोड़ो, कहानी लिखो, कविता लिखो, लेखिका बनो।' मैं थोड़ी असहज हो गई, साहस जुटाकर पूछा सर पत्रकारिता क्यों नहीं करना चाहिए। वाजपेयी जी ने कहा –पत्रकारिता में कई बार झूठ भी लिखा जाता है, क्योंकि नेता, अधिकारी हमेशा सच नहीं बोलते और महिलाएँ तो झूठ सहन नहीं कर सकती। पत्रकार को ख़बरों के लिए लोगों के पीछे भागना पड़ता है और कोई महिला ऐसे भागती रहे इसे न तो मैं मानवता मानता हूँ और न ही सम्माननीय लगता है।

और भी बहुत सारी बातें हुई। उन्होंने सूप हमारे साथ पिया। हम अटल जी से बातें करते रहे, ठहाके लगाते रहे)। वो...दिन ...उनका साथ ...महान विभूति की बातें सदैव-सदैव के लिए मेरे मानस पटल पर अंकित रहेंगी और मैं गर्वित रहूँगी कि दुनिया की इस असाधारण शख़्सियत के साथ इतने क़रीब से इतनी देर तक अनौपचारिक, सहज और बहुत ही खुशनुमा माहौल में बातचीत का अवसर मिल मुझे। ■■

भारत के दशवें प्रधानमंत्री

अटल बिहारी वाजपेयी

पण्डित कृष्ण बिहारी वाजपेयी के घर मध्य प्रदेश की ग्वालियर रियासत में शिन्दे की छावनी में 25 दिसंबर 1924 को ब्रह्ममुहूर्त में उनकी सहधर्मिणी कृष्णा वाजपेयी की कोख से अटल जी का जन्म हुआ था। कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने अपने पिताजी के साथ कानपुर में ही एल.एल.बी. की पढ़ाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा से संघ के कार्य में जुट गये। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ-साथ पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलतापूर्वक करते रहे।

वह भारतीय जनसंघ की स्थापना करने वालों में से एक थे और सन् 1968 से 1973 तक वह उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके थे। सन् 1952 में उन्होंने पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा, परन्तु सफलता नहीं मिली। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सन् 1957 में बलरामपुर (जिला गोण्डा, उत्तर प्रदेश) से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में विजयी होकर लोकसभा में पहुँचे। सन् 1957 से 1977 तक जनता पार्टी की स्थापना तक वे बीस वर्ष तक लगातार जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहें। मोरारजी देसाई की सरकार में सन् 1977 से 1979 तक विदेश मन्त्री रहे और विदेशों में भारत की छवि बनायी। 1980 में जनता पार्टी से असन्तुष्ट होकर इन्होंने जनता पार्टी छोड़ दी और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में मदद की। 6 अप्रैल 1980 में बनी भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद का दायित्व भी वाजपेयी को सौंपा गया। दो बार राज्यसभा के लिये भी निर्वाचित हुए। लोकतन्त्र के सजग प्रहरी अटल बिहारी वाजपेयी ने सन् 1996 में प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाली। 19 अप्रैल 1998 को पुनः प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और उनके नेतृत्व में 13 दलों की गठबन्धन सरकार ने पाँच वर्षों में देश के अन्दर प्रगति के अनेक आयाम छुए।

सन् 2004 में कार्यकाल पूरा होने से पहले भयंकर गर्मी में सम्पन्न कराये गये लोकसभा चुनावों में भा.ज.पा. के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन (एन.डी.ए.) ने वाजपेयी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा और भारत उदय (अंग्रेजी में इण्डिया शाइनिंग) का नारा दिया। इस चुनाव में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। ऐसी स्थिति में वामपंथी दलों के समर्थन से कांग्रेस ने भारत की केन्द्रीय सरकार पर कायम होने में सफलता प्राप्त की और भा.ज.पा. विपक्ष में बैठने को मजबूर हुई। अटल सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु

रमेश चौधरी

(प्रधानाचार्य)
जे. वी. चिल्ड्रन अकादमी,
गजपुर, गोरखपुर
उत्तर प्रदेश

शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ़ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीक से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊँचाईयों को छुआ। 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में वाजपेयी जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज़ शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नयी शुरुआत की। कुछ ही समय पश्चात पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतरराष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया। इस युद्ध में प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण भारतीय सेना को जान-माल का बहुत नुकसान हुआ और पाकिस्तान के साथ शुरु किए गए संबंध सुधार एक बार पुनः शून्य हो गए।

भारत भर के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (अंग्रेजी में-गोल्डन क्वाड्रिलेट्रल प्रोजैक्ट या संक्षेप में जी. क्यू. प्रोजैक्ट) की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्गों से जोड़ा गया। ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ इतना केवल शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। एक सौ वर्ष से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया। संरचनात्मक ढाँचे के लिये कार्यदल, सॉफ्टवेयर विकास के लिये सूचना एवं प्रौद्योगिकी कार्यदल, विद्युतीकरण में गति लाने के लिये केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग आदि का गठन किया। नई टेलीकॉम नीति तथा कोकण रेलवे की शुरुआत करके बुनियादी संरचनात्मक ढाँचे को मजबूत करने वाले कदम उठाये।

राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, आर्थिक सलाह समिति, व्यापार एवं उद्योग समिति भी गठित कीं। आवश्यक उपभोक्ता सामग्रियों के मूल्यों को नियन्त्रित करने के लिये मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन बुलाया। उड़ीसा के सर्वाधिक निर्धन क्षेत्र के लिये सात सूत्रीय निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम शुरू किया।

आवास निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए अर्बन सीलिंग एक्ट समाप्त किया। ग्रामीण रोजगार सृजन एवं विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के लिये बीमा योजना शुरू की। ये सारे तथ्य सरकारी विज्ञप्तियों के माध्यम से समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं।

वाजपेयी अपने पूरे जीवन अविवाहित रहे। उन्होंने लंबे समय से दोस्त राजकुमारी कौल और बी.एन. कौल की बेटी नमिता भट्टाचार्य को उन्होंने दत्तक पुत्री के रूप में स्वीकार किया। राजकुमारी कौल की मृत्यु वर्ष 2014 में हो चुकी है। अटल जी के साथ नमिता और उनके पति रंजन भट्टाचार्य रहते थे। वह हिंदी में लिखते हुए एक प्रसिद्ध कवि थे।

उनके प्रकाशित कार्यों में कैदी कविराई कुंडलियां शामिल हैं, जो 1975-77 आपातकाल के दौरान कैद किए गए कविताओं का संग्रह था और अमर आग है। अपनी कविता के संबंध में उन्होंने लिखा– "मेरी कविता युद्ध की घोषणा है, हारने के लिए एक निर्वासन नहीं है। यह हारने वाले सैनिक की निराशा की ड्रमबीट नहीं है, लेकिन युद्ध योद्धा की जीत होगी। यह निराशा की इच्छा नहीं है लेकिन जीत का हलचल चिल्लाओ। "

राजनीति के साथ-साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता आद्योपान्त प्रकट होती ही रही है। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति पायी। विख्यात ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एल्बम भी निकाला था।

वाजपेयी को 2009 में एक दौरा पड़ा था, जिसके बाद वह बोलने में असक्षम हो गए थे। उन्हें 11 जून 2018 में किडनी में संक्रमण और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की वजह से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया था, जहाँ 16 अगस्त 2018 को शाम 17:05 बजे उनकी मृत्यु हो गयी।

अटल जी की अस्थियों को देश की सभी प्रमुख नदियों में विसर्जित किया गया।

सर्वतोमुखी विकास के लिये किये गये योगदान तथा असाधारण कार्यों के लिये 2015 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। ■■

अटल सफ़रनामा

उन्हें जनता का आदमी कहा जाता है। 'अटल बिहारी वाजपेयी' जिन्होंने तीन कार्यकालों तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया, निस्संदेह एक उल्लेखनीय कद के व्यक्ति हैं। अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म तिथि 25 दिसंबर 1924 है। उनका जीवन नौ दशकों से अधिक समय तक सराहनीय रहा। अटल बिहारी वाजपेयी की जीवनी में, हम उनकी कुछ महान उपलब्धियों, प्रारंभिक जीवन, करियर और राष्ट्र के उत्थान में उनकी भूमिका और अन्य कुछ कार्य पर नज़र डालेंगे।

बचपन और प्रारंभिक जीवन

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ था। उनका जन्म कृष्ण बिहारी वाजपेयी और कृष्णा देवी के घर एक हिंदू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उज्जैन के बड़नगर में सरस्वती शिशु मंदिर और एंग्लो-वर्नाकुलर मिडिल (एवीएम) स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, अटल ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज गए जहाँ उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और हिंदी में बी.ए किया। इसके बाद उन्होंने कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने कानून की पढ़ाई की लेकिन 1947 के विभाजन के दंगों के कारण इसे छोड़ दिया।

आजीविका

अटल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय सदस्य थे, शुरुआत में वे स्वयंसेवक के रूप में शामिल हुए और बाद में विस्तारक (परिवीक्षाधीन पूर्णकालिक कार्यकर्ता) के पद तक पहुंचे। उन्होंने कई समाचार पत्रों– पाञ्चजन्य, राष्ट्र धर्म और दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के लिए उत्तर प्रदेश में विस्तारक के रूप में काम किया।

राष्ट्रीय राजनीति में वाजपेयी का पहला कदम 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय शुरू हुआ, जिसने अंततः भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को समाप्त कर दिया। उन्होंने एक पत्रकार के रूप में अपना करियर शुरू किया था, लेकिन वे इसे आगे नहीं बढ़ा पाए क्योंकि वे तत्कालीन भारतीय जनता संघ में शामिल हो गए, जिसने अंततः वर्तमान भारतीय जनता पार्टी को आकार दिया।

उन्हें शुरू में पार्टी का राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किया गया और उन्हें उत्तरी क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया, जो दिल्ली में स्थित था। दीनदयाल उपाध्याय के निधन के बाद, अटल को भारतीय जनता संघ का नेता बनाया गया और वर्ष 1968 में वे इसके अध्यक्ष बने। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक शानदार वक्तृत्व कौशल के व्यक्ति थे, जिसका उपयोग उन्होंने संघ की नीतियों का शानदार ढंग से बचाव करने के लिए किया।

अपने राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन के संदर्भ में, अटल बिहारी वाजपेयी नौ बार लोकसभा (संसद के निचले सदन) के लिए और दो बार राज्यसभा (संसद के ऊपरी सदन) के लिए चुने गए थे। इसलिए उन्हें एक अनुभवी सांसद माना जाता है।

सुशीला गुप्ता
'मुदिता'
गजपुर, गोरखपुर
उत्तर प्रदेश

प्रधानमंत्री के रूप में इतिहास

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का इतिहास भी काफी उल्लेखनीय है। उन्होंने तीन कार्यकालों तक देश के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। वर्ष 1996 में उन्होंने भारत के 10वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। हालाँकि, उस समय भारतीय जनता पार्टी लोकसभा में बहुमत बनाने में विफल रही, तो वाजपेयी ने 16 दिनों की अवधि के बाद ही इस्तीफा दे दिया क्योंकि यह स्पष्ट हो गया था कि उनके पास सरकार बनाने के लिए आवश्यक समर्थन नहीं था।

प्रधानमंत्री के रूप में उनका दूसरा कार्यकाल 1998 के आम चुनावों के बाद शुरू हुआ जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का गठन हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली यह सरकार कुल 13 महीने तक चली।

अटल बिहारी वाजपेयी का तीसरा और अंतिम कार्यकाल 1999 से 2004 तक पूरे 5 साल की अवधि तक चला। पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद, अटल बिहारी वाजपेयी लगातार 2 बार अनादेश के साथ भारत के प्रधानमंत्री बनने वाले एकमात्र उम्मीदवार थे।

योगदान

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के विकास में कई उल्लेखनीय योगदान दिए हैं। वे न केवल भारत के प्रधानमंत्री रहे, बल्कि विदेश मंत्री और संसद की कई महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष भी रहे। वे विपक्ष के सक्रिय नेता भी रहे। इस प्रकार श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वतंत्र भारत की घरेलू और विदेश नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वे सामाजिक समानता के सच्चे समर्थक और महिला सशक्तिकरण के प्रबल समर्थक थे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ऐसे भारत में विश्वास करते थे जो 5000 वर्षों के सभ्यतागत इतिहास में बंधा हुआ है, लेकिन आने वाले वर्षों में चुनौतियों का सामना करने के लिए खुद को आधुनिक, नवीनीकृत और कायाकल्प कर रहा है।

अटल बिहारी वाजपेयी को मुख्य रूप से एक व्यावहारिक व्यक्ति माना जाता था, लेकिन जब वर्ष 1998 में परमाणु हथियारों के परीक्षण के लिए उनकी आलोचना की गई, तो उन्होंने एक अडिग विद्रोही रुख अपनाया। उन्होंने कश्मीर क्षेत्र को लेकर पाकिस्तान और भारत के बीच लंबे समय से चल रहे विवाद को सुलझाने के लिए समर्पित प्रयास करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रेरक नेतृत्व के कारण, भारत अर्थव्यवस्था में स्थिर वृद्धि हासिल करने में सक्षम रहा और जल्द ही देश के लिए सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अग्रणी बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

राजनीतिक विघटन

अपनी अनेक उपलब्धियों के बावजूद, अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार में कमियाँ भी थीं। भारतीय समाज का आर्थिक रूप से कमज़ोर तबका अक्सर आर्थिक विकास की राह में पिछड़ा हुआ महसूस करता था। 2002 में हुए गुजरात दंगों पर अपनी बोझिल प्रतिक्रिया के लिए भी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार की काफ़ी आलोचना हुई थी। वर्ष 2000 की शुरुआत में उनकी सरकार ने राज्य द्वारा संचालित कई उद्योगों से सार्वजनिक धन का विनिवेश भी शुरू कर दिया था।

2004 के संसदीय चुनावों में, वाजपेयी के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार हार गई और उन्होंने दिसंबर 2005 में सक्रिय राजनीति से संन्यास की घोषणा कर दी।

व्यक्तिगत जीवन

अटल बिहारी वाजपेयी ने कभी शादी नहीं की और पूरी ज़िंदगी कुंवारे ही रहे। इसके बजाय उन्होंने अपने पुराने दोस्त राजकुमारी कॉल और प्रोफ़ेसर बीएन कॉल की बेटी को गोद लिया। उनकी दत्तक बेटी नमिता भट्टाचार्य थी और पूरा परिवार उनके साथ रहता था। 16 अगस्त 2018 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

उपलब्धियां

राजनीतिक आकांक्षाओं के अलावा अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रसिद्ध कवि भी थे। उन्होंने हिंदी में कविताएँ लिखी। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में कैदी कविराज की कुंडलियों, कविताओं का एक संग्रह है जिसे उन्होंने 1975-77 के आपातकाल के कारावास के दौरान लिखा था इसमें 'अमर आग है' भी शामिल हैं।

देश के प्रति उनके निस्वार्थ समर्पण को मान्यता देते हुए, वे अपना पहला और एकमात्र प्यार कहते हैं। श्री अटल बिहारी वाजपेयी को 2014 में भारत के सर्वोच्च नागरिक

सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने जीवन के 50 से अधिक वर्ष समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित किए। वर्ष 1994 में उन्हें 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' का खिताब दिया गया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने न केवल खुद को एक प्रख्यात राष्ट्रीय नेता साबित किया, बल्कि वे एक विद्वान राजनीतिज्ञ और एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। उनके कई कौशल ने उन्हें एक बहुआयामी व्यक्तित्व बनाया। उनके कार्यों में राष्ट्रवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता झलकती है, जहाँ उन्होंने जनता की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा– 'हमारे लिए गर्व की बात है कि 24 दिसंबर 2002 को अटल बिहारी वाजपेयी इस देश के सबसे पहले मेट्रो के पैसेंजर बने थे। प्रधानमंत्री मोदी दिल्ली मेट्रो की मेजेंटा लाइन के उद्घाटन के लिए 25 दिसंबर को नई दिल्ली में आयोजित एक आयोजन में बोल रहे थे।

प्रधानमंत्री जी का भाषण– 'अटल बिहारी वाजपेयी की जीवनी: इस साल भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न से सम्मानित अटल बिहारी वाजपेयी की 5वीं पुण्यतिथि है। उन्होंने 1996 में पहली बार 13 दिनों के लिए भारत के 10वें प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। पीएम के रूप में उनका दूसरा कार्यकाल 1998 से 1999 तक 13 महीने का था। उन्होंने 1999 से 2004 तक पीएम के रूप में पूर्ण कार्यकाल के लिए पदभार संभाला।'

2018 में 93 वर्ष की आयु में वाजपेयी का निधन हो गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सहित अन्य गणमान्य लोगों ने 16 अगस्त 2022 को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चौथी पुण्यतिथि पर दिल्ली में 'सदैव अटल' के नाम से प्रसिद्ध वाजपेयी स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। ■■

द साइलेंट स्ट्रोक

(द्विमासिक पत्रिका)

लेखकों से अनुरोध

1. द साइलेंट स्ट्रोक द्विमासिक पत्रिका हेतु साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कहानी, कविता, ग़ज़ल, यात्रा वृतांत, पुस्तक समीक्षा, महिला, युवा, बच्चें, वृद्ध आदि से संबंधित लेख, तीज-त्यौहार आदि पर लेखकों से रचनाएं आमंत्रित हैं।
2. द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशन के लिए भेजी जाने वाली सामग्री मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए।
3. यह सामग्री सरल और सुबोध भाषा में होनी चाहिए।
4. लेख आदि फुल स्केप आकार के 4-5 टंकित पृष्ठों/अधिकतम 2000 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।
5. लेख से संदर्भित चित्र/रेखाचित्र भी भेजे जा सकते हैं।
6. रचना यूनिकोड फॉन्ट में वर्ड फॉरमेंट में ही भेजें।
7. द साइलेंट स्ट्रोक में मानक हिंदी वर्तनी का प्रयोग किया जाता है। अतः रचनाएं इसी वर्तनी के अनुसार भेजी जाएं।
8. समीक्षार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां भेजी जानी चाहिए।
9. रचना के साथ लेखक अपना संक्षिप्त जीवन परिचय तथा अपना एक पासपोर्ट आकार का फोटो भी भेजे।
10. रचना के साथ अपना फोन नं एवं ई-मेल अवश्य भेजें।
11. रचनाएँ thesilentstroke@gmail.com पर ही भेजें।
12. सामग्री के प्रकाशन विषय में संपादक का निर्णय अंतिम माना जाएगा।

–राकेश शर्मा 'निशीथ' ■■

भारत के दसवें प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी की साहित्य-राजनीति का अनुपम संयोग...

अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती हर साल 25 दिसंबर को मनाई जाती है। यह दिन भारत के सबसे सम्मानित और प्रिय नेताओं में से एक अटल जी को श्रद्धांजलि देने के लिए समर्पित है। वाजपेयी जी को उनकी प्रभावशाली भाषण कला, अद्वितीय राजनीतिक कौशल और देश के प्रति अटूट समर्पण के लिए जाना जाता है। उनकी नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शी सोच ने भारतीय राजनीति और समाज पर गहरी छाप छोड़ी है। यह जयंती न केवल उनके ऐतिहासिक योगदानों को याद करने का अवसर है, बल्कि उनके जीवन से प्रेरणा लेने का भी समय है। उन्होंने देश की एकता और विकास के लिए जो मूल्य स्थापित किए, वे आज भी लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी जी ने एम.ए किया था। वाजपेयी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्वालियर के गोरखी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (अब लक्ष्मीबाई कॉलेज) से स्नातक की पढ़ाई पूरी की, जहां उन्होंने हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी विषयों में गहरी रुचि विकसित की। स्नातक के बाद, अटल बिहारी वाजपेयी ने कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति विज्ञान में मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम.ए) की डिग्री हासिल की। पढ़ाई के दौरान उनकी रुचि राजनीति और अंतरराष्ट्रीय मामलों की ओर बढ़ी, जिसने उनके जीवन और करियर को प्रभावित किया।

तीन बार रहे भारत के प्रधानमंत्री

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के संस्थापक सदस्यों में से एक थे और तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। उनके कार्यकाल में देश ने कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की। जिसमें आर्थिक सुधार, परमाणु परीक्षण और कूटनीति के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां शामिल हैं। पोखरण परमाणु परीक्षण और लाहौर बस यात्रा जैसे कदम उनके साहसी और शांतिपूर्ण दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। उनकी कविताएं और विचारशील लेखन उनके गहरे संवेदनशील व्यक्तित्व का परिचय देते हैं। उन्होंने हमेशा राजनीति को सेवा का माध्यम माना और अपने जीवन में सादगी, ईमानदारी और अखंडता को प्राथमिकता दी। अटल जयंती पर देश भर में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। ऐसे में आज हम आपको बताएंगे उनके शैक्षणिक जीवन के बारे में।

अटल जी ने हमेशा जीवन की चुनौतियों का आगे बढ़कर सामना किया। अपने राजनीतिक जीवन में कविताओं से लोगों का मन मोहने वाले अटल जी की कुछ कविताएं तो दिल को छू जाती हैं। हम यहां आपको उनकी

डॉ. इतेंद्रधर दुबे
(असिस्टट प्रोफेसर)
बी.एड. विभाग, चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर

लेखनी से परिचित करा रहे हैं।

ज़िक्र राजनीति का हो या कविताओं का अटल बिहारी वाजपेयी जैसे व्यक्तित्व का नाम इन दोनों की सूचिकाओं में अव्व्ल स्थान रखता है। एक राजनीतिज्ञ के लिए जितना व्यवहारिक होना ज़रूरी है, एक कवि होने के लिए उतना ही भावनात्मक होना भी ज़रूरी है लेकिन अटल जी दोनों के ही संयोग से बने एक विशिष्ट व्यक्ति रहें।

अटल जी ने हमेशा जीवन की चुनौतियों का आगे बढ़कर सामना किया। अपने राजनीतिक जीवन में कविताओं से लोगों का मन मोहने वाले अटल जी की कुछ कविताएं तो दिल को छू जाती हैं। हम यहां आपको उनकी लेखनी से परिचित करा रहे हैं।

अटल जी की राजनीतिक पारी तो जग-जाहिर है, परमाणु परीक्षण जैसे साहसिक फ़ैसले लेने वाले अटल जी की कविताओं में भी उनके इन हौंसलों की महक महसूस की जा सकती है। उनकी कविताएं मन को झंकृत करती हैं, वह लिखते हैं कि–

प्राण-पण से करेंगे प्रतिकार,
समर्पण की माँग अस्वीकार,
दाँव पर सब कुछ लगा है, रुक नहीं सकते,
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

अटल जी ने अपने जीवन काल के एक-एक क्षण को देश-सेवा और सुधार के लिए समर्पत किया है। आज अगर वह पलटकर अपने अतीत को देखते तो अपने जीवन की सार्थकता को अनुभव करते। यूं भी कवि अक्सर ही बीते समय में किसी भी प्रहर खो जाते हैं, ऐसे में अटल जी ने भी जब अपने भूतकाल पर दृष्टि डाली तो लिखा कि–

सीकचों मे सिमटा जग
किंतु विकल प्राण विहग
धरती से अम्बर तक
गूंज मुक्ति गीत गया
एक बरस बीत गया
पथ निहारते नयन
गिनते दिन पल छिन
लौट कभी आएगा
मन का जो मीत गया
एक बरस बीत गया

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं...

इसमें कोई संदेह नहीं है कि वो देश जहां कण-कण में भगवान होने की शिक्षा दी जाती है और देश-प्रेम का पाठ पढ़ाया जाता है, उस देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री जो कवि हृदय भी हैं वह देश के गौरव को कलमबंद न करें।
पढ़ें अटल जी की देशभक्ति से ओत-प्रोत कविता-

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं,
जीता-जागता राष्ट्रपुरुष है
हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है
पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं
पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघायें हैं
कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है
यह चन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है
इसका कंकर-कंकर शंकर है
इसका बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है
हम जियेंगे तो इसके लिये
मरेंगे तो इसके लिये

अटल बिहारी वाजपेयी ने लाल कृष्ण आडवाणी के साथ मिलकर भाजपा को देश की राजनीति में लोकप्रिय बनाया। भाषण का बेबाक अंदाज और उनकी बेलाग शैली की वजह से लोग उनके मुरीद बने। संसद में अटल की भाषण कला से जवाहर लाल नेहरु भी प्रभावित हुए। उदार छवि की वजह से अटल को विरोधी दलों के नेताओं का भी सहयोग मिला।

■■

"One of the penalties for refusing to participate in politics is that you end up being governed by your inferiors."

— Plato

THIS PHOTO ARE THIS TIME'S

Topic

"SEE THE IMAGE, WRITE A POEM."

AND SEND IT TO US ALONG WITH YOUR PHOTO

THREE EXCELLENT POEMS WILL BE PUBLISHED IN THE MAGAZINE AND WILL BE AWARDED WITH A CERTIFICATE.

"छवि देखें, कविता लिखें" **और अपनी फोटो के साथ हमें भेजें। तीन उत्कृष्ट कविताओं को पत्रिका में स्थान दिया जाएगा एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।**

राकेश शर्मा 'निशीथ'
प्रधान संपादक
द साइलेंट स्ट्रोक-पत्रिका

अजातशत्रु वाजपेयी

हर दिल अज़ीज़, हाज़िर जवाब...
कुशल खिलाड़ी राजनीति के,
और जादूगर थे शब्दों के।
अजातशत्रु जिनको कहते,
जन-जन के वे प्रिय नेता थे।
भाषा पर प्रबल नियंत्रण था,
सहयोगी-सहयोगी रहते।
हिन्दी पर पकड़ निराली थी,
हिन्दू ही जीवन शैली थी।
यूएनओ में संबोधन हिन्दी में,
उनके द्वारा था प्रथम बार।
भारत ऊंचा हुआ भाल,
कर दिया कमाल, हो गया कमाल।
हिन्दू तन-मन,
हिन्दू जीवन वे अक्सर गाया करते थे।
वे कवि थे, कोमल हृदय उनका,
हर निश्चय पर दृढ़ रहते थे।
उनकी आपत्ति धर्मनिरपेक्ष शब्द पर थी,
वे चाहते थे पंथनिरपेक्ष करना।
आशा और निराशा,
वो जिए मगर दिनों के सँग।
मैं गीत नया गाता हूँ,
या मैं गीत नहीं गाता हूँ।
ऐसे करते प्रकट भाव अपना,
संसद इनके कभी दो ही थे।
फिर भी उपस्थिति जमती थी,
सरकार बनाई औरों सँग।
कभी 13 दिन, कभी 13 माह ,
कभी एक वोट से सरकार बनी।
कभी सरकार चली पूरे 5 साल,
वे हर विवाद का हल, बातों से चाहते थे।
राम मन्दिर के संबंध में,
आपसी सहमति या न्यायालय से।
पत्रकारिता से प्रधानमन्त्री तक का सफर,
यूँ ही चलता रहा... चलता रहता... चलता ही रहा।
कभी झुके नहीं, कभी रुके नहीं, कभी थके नहीं,
'यदुवर', अब विश्राम समाधी में।

■■

यदुनंदन प्रसाद शर्मा 'यदुवर'
नई दिल्ली

राष्ट्रकान्तारः
अटल बिहारी जी

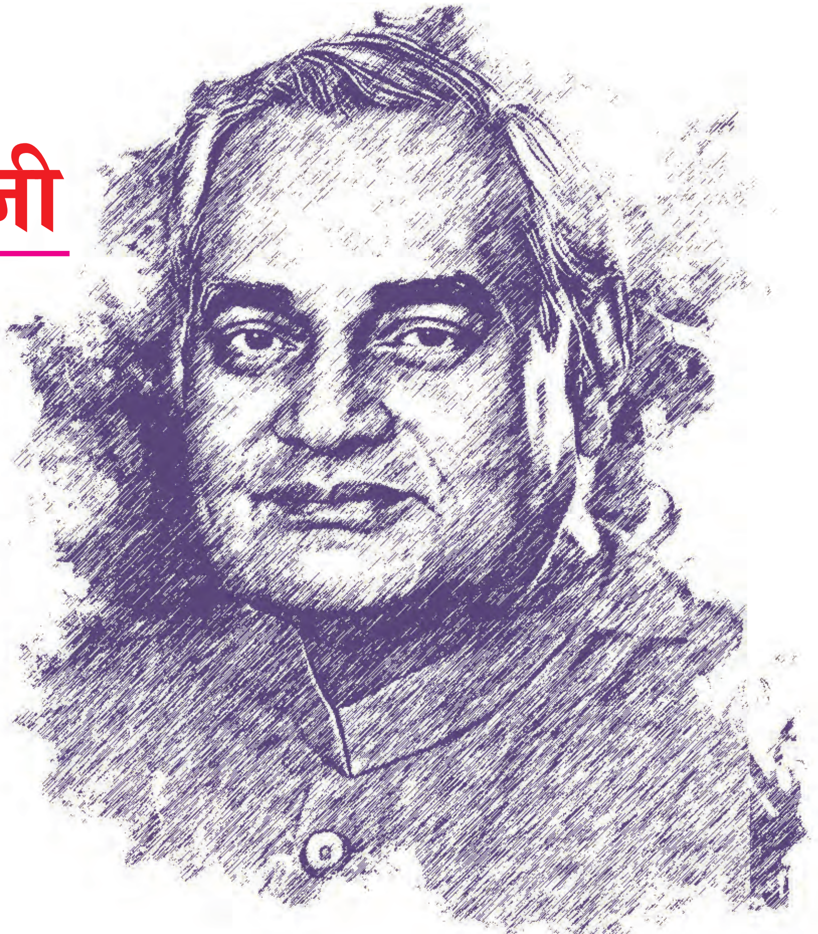

एक मूर्ति-सी मेरे अंतर्मन में बसी थी,
साक्षात सरलता लिए बिहारी की बांसुरी-सी।
अटल तो अपने इरादों का उन्हें होना ही था,
संस्कारों का मूर्तिमान भान हमें होना ही था।

वह वीर बाल दिवस की प्रेरणा थी,
या फिर संख्या 13 की दो बार की माया।
फतेह सिंह की शहीदी का मूर्त प्रतिमान,
या जोरावर सिंह का धर्म के प्रति अभिमान।

वे सच्चे, स्वाभिमानी, राष्ट्रभक्त, कवि रूप थे,
भारत की शान-गौरव का भान उनके रुज थे।
निष्ठा, समर्पण देश-प्रेम की अद्भुत मिसाल,
राजनीति में उनकी मुखर वाणी जादू-सा हाल।

जनसंघ से जुड़ा दिल सत्यवादी हर बुराई से लड़ा,
राजनीति में विपक्ष भी बाधित, माना उन्हें बड़ा।
संस्कारों में बसा था उनका आदर्श चरित्र सर्वदा,
कवि की केवल कविता देती परिचय उसका सदा।

नेता थे महान, सच्चे, राष्ट्र सेवक प्रखर,
वीरता, त्याग और राष्ट्र-प्रेम पर मिटने को तत्पर।
देश की भलाई के लिए विष पीने को राज़ी,
पक्ष और विपक्ष से परे देश हित में प्रतिभागी।
त्रयोदश दिन फिर तेरह महीने तक चलने वाले,
प्रथम गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री दिलों को जीतने वाले।
उनके द्वारा दिखाया निस्वार्थ मार्ग सदा से दिव्य,
भारत भूमि पर उनका स्थान अद्भुत अद्वितीय।

प्रत्येक कार्य में उनकी सृजनशीलता का संग,
प्रेरणा थी उनमें आत्मा का अनुरागी रंग।
अटल जी की छवि भारतीय मानस पर अंकित ,
स्मृतियों में उनके विचार सदैव होंगे प्रवर्तित।

संघर्षों में भी अविचल न हारे वो कभी,
अपने आदर्शों से विचलित न हुए वे कभी।
संगीत में रमे, शास्त्रों में निष्णात् निपुण,
पत्रकारिता में उत्कर्ष विचारों के पथिक प्रचंड।

कवि, विद्वान और देश के महान् नायक,
वे थे जीवन के स्वरों के ज्ञायक।
साहित्य संस्कारों से अभ्यस्त और अज्ञेय,
सपनों का दर्शन जिनका जीवन सार्थक प्रमेय।

–नवदीप राज सक्सैना
उप महानिदेशक सेवानिवृत्त
भारतीय तटरक्षक

मेनिका साकेत
सागर (मध्य प्रदेश)

हमारे अटल बिहारी दृष्टाता

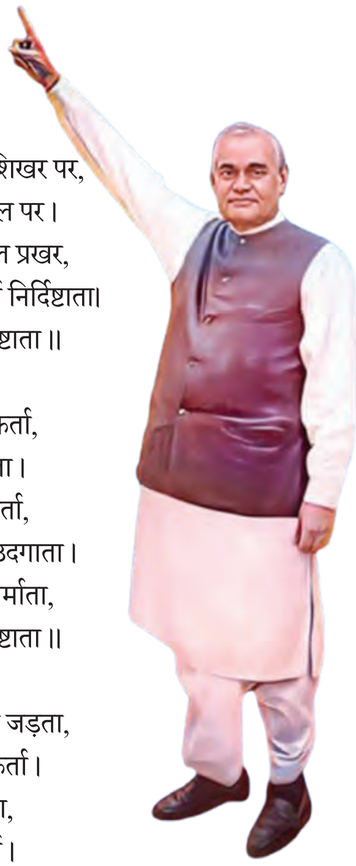

त्याग-समर्पण, संघर्ष शिखर पर,
सदा अटल मानव पटल पर।
आत्मविश्वासी, वाचाल प्रखर,
अविवाहित जीवनकर्म निर्दिष्टाता।
हमारे अटल बिहारी दृष्टाता ।।

ओजस्वी कवि रचनाकर्ता,
विविध लेख व्याख्याता।
जो थे सत्तारूढ़ विघ्नहर्ता,
गठजोड़युक्त प्रजातंत्र उदगाता।
वो भारतीय जनसंघ निर्माता,
हमारे अटल बिहारी दृष्टाता ।।

सबल की संस्कृति की जड़ता,
राष्ट्र विकास संकल्पकर्ता।
कारगिल विजय प्रदाता,
पक्ष-विपक्ष नेतृत्वकर्ता।
स्वर्णिम चतुर्भुज संदाता,
वो प्रधानमंत्री पद अधिष्ठाता।
हमारे अटल बिहारी दृष्टाता ।।

■■

डॉ. माधवम सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
शहीद स्मारक राजकीय
महाविद्यालय, यूसुफपुर
मुहम्मदाबाद, गाज़ीपुर

भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी युग पुरुष थे। भारतीय लोकतंत्र और राजनीति में नए प्रतिमान स्थापित करने के लिए उन्हें सदैव याद किया जाता रहेगा। राजनीति में नैतिकता और मर्यादा का निर्वहन कैसे किया जाता है? यह अटल जी से सीखा जा सकता है। पोखरण में परमाणु परीक्षण, स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना, सर्वशिक्षा अभियान, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम, सुशासन व वैज्ञानिक व तकनीकी विकास के माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी जी भारत के सर्वांगीण विकास को एक नई ऊंचाई प्रदान करते हैं। अटल जी भारत की विदेश नीति को नया मोड़ देकर अंतरराष्ट्रीय फ़लक पर भारत की अस्मिता का परचम लहराते हैं। अटल जी राजनेता के साथ-साथ काल से नई रार ठानने वाले कवि थे। उनकी कविताओं में एक ओर उनका समूचा जीवन दर्शन दिखाई देता है तो दूसरी ओर चुनौतियों से लड़ता हुआ और राह गढ़ता हुआ मन दिखाई देता है। ऐसे युग पुरुष, राजनेता, कुशल प्रशासक व कालजई कवि भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी पर केंद्रित पत्रिका के सम्पादन के लिए मैं बड़े हर्ष और उत्साह के साथ अपनी शोध छात्रा सुशीला गुप्ता को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ। यह पत्रिका अटल जी के मूल्यों के साथ जन-जन तक पहुंचे यही कामना करता हूँ।

अटल बनूंगा, अटल रहूंगा

कांटों से संघर्ष करूंगा
अंधकार से सदा लड़ूंगा
भारत से दुनिया रोशन हो
संस्कृति का वह सूर्य बनूंगा
अटल बनूंगा, अटल रहूंगा

अखंडता के लिए सदा
जिसने अलख जगाया
माता की रक्षा की खातिर
कारगिल में टकराया
दुश्मन की मंशा असफल हो
हिमालय-सा भीत बनूंगा
अटल बनूंगा, अटल रहूंगा

घर में बैठे घात लगाए
तोड़ रहे नित मर्यादाएं

बहन-बेटियों के लिए यहां जो
खींच रहे अनगिनत सीमाएं
उन सबका प्रतिकार करूंगा
अटल बनूंगा, अटल रहूंगा

समता ही है लक्ष्य हमारा
न्याय हमें है सबसे प्यारा
निर्धनता का उन्मूलन हो
मिटे चतुर्दिक अंधियारा
भ्रष्टाचार का अंत हो सके
सुशासन का दीप बनूंगा
अटल बनूंगा, अटल रहूंगा
भारत का गौरव गान बढ़े
जवान किसान विज्ञान बढ़े
पोखरण में किया परीक्षण
नव ऊर्जा का संचार बढ़े
साहस सामर्थ्य फलें फूलें
मैं पौरुष के गीत बनूंगा
अटल बनूंगा, अटल रहूंगा ॥

■■

जो लोग सवाल नहीं उठाते, वो पाखंडी हैं...
जो सवाल नहीं कर सकते,
वे मूर्ख हैं...
जिनके ज़हन में सवाल उभरता ही नहीं,
वे गुलाम हैं...

–जार्ज गॉर्डन बायरन

अटल बिहारी वाजपेयी

सिर ऊँचा जिनकी यादों में,
गर्दन मैंने झुकाई है।
साहस कर कुछ लिखने को,
मैंने भी कलम उठाई है।।

अद्‌भुत, अकथनीय-सा एक कथानक
टहल चलें जिस तरफ, बने उधर रास्ता,
उधर हो सब सुखदायक, ऐसा एक नायक।
लहरें, नहरें, नदियाँ, सागर, सभी दिशाएँ।।

ये धरती - ये आसमान जिनका परिचायक,
उन पर लिखना बहुत कठिन है।
फिर भी कलम उठाई है,
सिर ऊँचा जिनकी यादों में।
गर्दन हमने झुकाई है।।

बिना आपके, कवियों की टोली में,
पसरा सूनापन।
हारे जिनसे राजनीति में,
उन पर छाया बौनापन।
रीति-नीति के रहे सारथी,
मर्यादा का पुल बाँधा।

राजनीति में भी रहकर के,
सबसे ही था अपनापन।
जिनकी रीति-नीति की,
दुश्मन ने भी करी बड़ाई है।
सिर ऊँचा जिनकी यादों में,
गर्दन हमने झुकाई है।
बातचीत में निपट-निराले,
राजनीति में कद्दावर।
जग को जीवन देने वाले,
भारत के हैं श्रीनागर।

वृक्षों-सा था स्वभाव उनका,
औरों पर सब न्यौछावर।
ईख-सी सख्ती ऊपर रखते,
अन्दर मीठे की गागर।

जिनको खोने की यादों में,
आँख सदा भर आई है,
सिर ऊँचा जिनकी यादों में,
गर्दन हमने झुकाई है।

■■

अजय कुमार पाण्डेय
प्रधानाचार्य
आईआरआईएस क्राउन सीनियर माध्यमिक विद्यालय
आम्रपाली योजना, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

स्मिता दास

प्रवक्ता (हिन्दी)
एस.आर. डिग्री कॉलेज
गजपुर, बांसपार, गोरखपुर
उत्तर प्रदेश

दृढ़ संकल्पवान

दृढ़ संकल्पवान हैं वो,
भारत की शान है वो।
राष्ट्र गौरववान है वो,
कर्म अटलवान है जो।।

शत्रु भय से काँप उठे,
रण-तूर्य बीच जो वो डटे।
उसकी एक आलाप से,
अरि भी करे जाप रे।।

नाम से वो अटल है,
जानता जग सकल है।
राष्ट्र जगहित के लिए,
शत्रु का वो विफल है।

राजनीति का स्तम्भ है वो,
भारत का दम्भ है वो।
सर्वशक्तिमान है वो,
अपना अटलवान है वो।।

"जो पुस्तक सबसे अधिक सोचने के लिए मजबूर करती हैं, वही तुम्हारी सबसे बड़ी सहायक हैं।"
—जवाहरलाल नेहरू

डॉ. नीतू सिंह राय

नई दिल्ली

अटल की अप्रतिहत ज्योति

अटल की अप्रतिहत ज्योति
और
व्यक्तित्व में अभिव्यक्त अभिलाष
संघर्षशील मनोबल से संवरता था
नव-भारत का विकास।

लोक कल्याण के संकल्पों में
छलकता था ज्वलंत पराक्रम
राजनीति के रण में भी कवि-हृदय का था ओजपूर्ण
समर्पण।

साहसी स्वप्नद्रष्टा
जिनके शब्दों में
सदा राष्ट्रहित का संचार
कविता आंखों में थी बसी
था हृदय में भावनाओं का भव्य प्रसार।

कवि-मन की पराकाष्ठा नीति-निर्माण में ढलती रही
शांतिपूर्ण संवाद से समर्पित
राष्ट्र-सेवा फलती रही
हृदयग्राही स्वरों से स्वाभिमान की विजयाध्वनि गूंजती रही।

साहस, संवेदना
और संकल्पशीलता का पाठ पढ़ाकर चले गये
राजनीति के क्षेत्र में
एक अलख जलाकर चले गये।

अटल राष्ट्रभक्त

भारत माँ के आंचल में टंके
राष्ट्र भक्त सितारे ये चंद
सच्चाई, अच्छाई, पुरुषार्थ
सत्य से जिनका सतत संबंध।

सादा जीवन उच्च विचार वाले
ऐसे पितृ पुरुष, स्नेही अटल
ओजस्वी वक्ता, प्रखर राजनेता
जिनकी मोहक मुस्कान निश्छल।

चैतन्यता से रोशन
उज्जवल निर्दोष छवि
उच्च आदर्श, सादगी से
तोड़ते विरोधी के फंद।

प्रेरणा पुंज बना जीवन
होंठों पर मुक्त, बेबाक छंद
क्या अपने, क्या दुश्मन
सभी इनके मोहपाश में बंद।

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत यह है कि हमने हमेशा राष्ट्र को राजनीति से ऊपर रखा है।

—अटल बिहारी वाजपेयी

अनुपमा 'अनुश्री'
भोपाल, मध्य प्रदेश

संक्षिप्त जीवन परिचय

- 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर में जन्म हुआ।
- अंग्रेज़ी राज के ख़िलाफ़ भारत छोड़ो आंदोलन (1942-45) के दौर से राजनीतिक यात्रा शुरू हुई।
- वर्ष 1951 में भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के संस्थापक सदस्य।
- 1953 में कश्मीर मसले पर मुखर्जी के आंदोलन के दौरान वह उनके साथ थे।
- वर्ष 1957 में भारतीय जनसंघ संसदीय पार्टी से दूसरे लोकसभा चुनाव में पहली बार लोकसभा पहुंचे।
- वर्ष 1957-77 के दौरान भारतीय जनसंघ संसदीय दल के नेता रहे।
- वर्ष 1962 में राज्य सभा सदस्य।
- वर्ष 1966-67 में सरकारी आश्वासनों संबंधी समिति के अध्यक्ष।
- वर्ष 1967-70 में लोक लेखा समिति के अध्यक्ष।
- वर्ष 1968-73 में भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष।
- वर्ष 1971 में पांचवें लोक सभा चुनाव में अपने तीसरे कार्यकाल के लिए फिर चुने गए।
- वर्ष 1977 में छठे लोक सभा चुनाव में अपने चौथे कार्यकाल के लिए चुने गए।
- वर्ष 1977-79 में केंद्रीय विदेश मंत्री रहे।
- 4 अक्टूबर, 1977 को संयुक्त राष्ट्र सभा में हिंदी में भाषण देकर इतिहास रचा।
- वर्ष 1977-80 जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य।
- रहे।
- वर्ष 1980 में सातवें लोकसभा चुनाव में अपने पांचवें कार्यकाल के लिए चुने गए।
- वर्ष 1980-86 के दौरान भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष रहे।
- वर्ष 1980-84, 1986 और 19093-96 में भाजपा संसदीय दल के नेता रहे।
- वर्ष 1986 में राज्य सभा के सदस्य और सामान्य प्रयोजन समिति के सदस्य रहे।
- वर्ष 1988-90 के दौरान गृह समिति के सदस्य और कार्यमंत्रणा समिति के सदस्य रहे।
- वर्ष 1990-91 में याचिका समिति के अध्यक्ष रहे।
- वर्ष 1991 में 10वें लोकसभा चुनाव में अपने छठे कार्यकाल के लिए चुने गए।
- वर्ष 1991-93 के दौरान लोक-लेखा समिति के अध्यक्ष रहें।
- वर्ष 1993-96 के दौरान विदेशी मामलों की स्थायी समिति के अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे।
- 1994 में उन्हें भारत का 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' चुना गया।
- वर्ष 1996 में 11वें लोकसभा चुनाव में अपने सातवें कार्यकाल के लिए चुने गए।

- 16 मई से 31 मई 1996 के दौरान भारत के प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, कई मंत्रालयों के प्रभारी, कोयला, संचार, ऊर्जा स्टील, पर्यावरण, खाद्य सुरक्षा, जम्मू-कश्मीर, रेलवे, ग्रामीण विकास, परमाणु ऊर्जा, कपड़ा, परिवहन आदि।
- वर्ष 1996-97 में लोक सभा में नेता प्रतिपक्ष रहे।
- वर्ष1997-98 में विदेशी मामलों की स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे।
- 1998 में 12वीं लोक सभा चुनाव में अपने आठवें कार्यकाल के लिए चुने गए।
- 1998 में पोखरण परीक्षण करके दृढ़ नेतृत्व का परिचय दिया और विश्व को भारत की परमाणु क्षमता का अहसास कराया।
- 1998-99 में भारत के प्रधानमंत्री रहे, इस दौरान विदेश मंत्रालय सहित अन्य मंत्रालय, जो किसी मंत्री को आवंटित नहीं हुए थे, उनके प्रभार संभाले।
- 1999 में 13वीं लोकसभा चुनाव में अपने नौवें कार्यकाल के लिए चुने गए।
- 13 अक्टूबर 1999 से 13 मई 2004 के दौरान भारत के प्रधानमंत्री रहे। इस दौरान अन्य मंत्रालय, जो किसी मंत्री को आवंटित नहीं हुए थे, के प्रभार संभाले।
- भारत और पाकिस्तान के बीच तल्ख रिश्तों को सुधारने का प्रयास किया। 1999 में लाहौर बस यात्रा की।
- वर्ष 2000 में अटल जी द्वारा तीन राज्य का निर्माण हुआ – झारखंड, छत्तीसगढ़ एवं उत्तराखंड।
- राजनीति में अमूल्य योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया। ■■

श्री संकटमोचन न्यास

ग्राम - गजपुर, जनपद - गोरखपुर (उ.प्र.)

रजिस्ट्रेशन संख्या - 47
रजिस्ट्रेशन तिथि - 25 नवम्बर, 2022
तहसील - बाँसगाँव
जनपद - गोरखपुर (उ.प्र.)

पिन कोडः 273413
(मो.) 9868713379
8447651881
ई-मेलः hanumataradhana@gmail.com

संदर्भः ....

दिनांकः 12 फरवरी 2025

डॉ. हरिविलास चौधरी
संस्थापक अध्यक्ष

शुभकामना

भारतवर्ष के भूतपूर्व यशस्वी प्रधानमंत्री भारतरत्न सव. अटल बिहारी वाजपेयी जी एक आदर्श पुरूष के रूप में देश के राजनैतिक एवं साहित्यिक पटल पर जनमानस द्वारा समादरित हैं।

श्री वाजपेयी जी की बहुमुखी प्रतिभा में राष्ट्रधर्म के अंतर्गत देश के सर्वांगीण विकास हेतु देश में सुशाषन, राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण, प्रशासन में नैतिकता आदि के सुविचार समाहित हैं।

भारत के कृषक समाज की उन्नति श्री वाजपेयी जी के चिंतन की प्राथमिकता रही है। यहाँ के हरितक्रांति का लाभ वे किसानों तक पहुँचाने में सदा तत्पर रहते थे। एक वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक के रूप में मैं स्वयं इसका साक्षी हूँ।

राजभाषा हिन्दी के प्रति उनका प्रेम अटल रहा है। संयुक्त राष्ट्र के समक्ष श्री अटल बिहारी जी का हिन्दी में उद्बोधन हमें गौरवान्वित करता है। एक समर्थ कवि के रूप में उनकी कविताओं में, समाज के साथ द्वंदात्मक भाव न रखते हुए अपने विचारों को सफलीभूत करते हुए समय के साथ चलने का संदेश मिलता है।

अपने अटल ब्रह्मचर्य के साथ राष्ट्र के प्रति वाजपेयी जी का समर्पित जीवन उनका एक सुपरिचय है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को समर्पित **'द साइलेंट स्ट्रोक'** पत्रिका का शुभ प्रस्थान एक समुचित निर्णय है। पत्रिका के **'अटल विशेषांक'** हेतु मैं इसके प्रधान संपादक राकेश शर्मा जी और अतिथि संपादक प्रो. कन्हैया त्रिपाठी जी को साधुवाद एवं शुभकामना देता हूँ। समर्थ सहसंपादक हेतु सुश्री सुशीला गुप्ता 'मुदिता को मेरी विशेष शुभकामना है। जनपद गोरखपुर स्थित गजपुर ग्राम की सुपुत्री 'मुदिता का योगदान **'द साइलेंट स्ट्रोक'** पत्रिका की लोकप्रियता के साथ एक आदर्श साहित्यकार का मार्ग प्रशस्त करें। ईश्वर से मेरी ये ही प्रार्थना है।

हरिविलास चौधरी

हरिविलास चौधरी 'शक्तिबोध'

THECREATIVEART.IN

Print India GROUP Mission 2025

Hello Friends,
you will be happy to know
that my new book
"My Sweetheart"
will be released in
March 2025.

Hindi & English

My Sweet Heart

Compilation and Editing:

DR. PRITY PRASAD

Bilaspur

Coming Soon

New Book

शब्दाहुति प्रकाशन

OFFICE - FARIDABAD | 9990753336

SHABDAHUTIPRAKASHAN@GMAIL.COM | THECREATIVEART.IN

Special issue on 100th anniversary of

ATAL BIHARI VAJPAYEE

मैं जी भर जिया,
मैं मन से मरुं
लौटकर आऊंगा,
कूच से क्यों डरुं

–अटल बिहारी वाजपेयी

The CREATIVEART Publisher

ALL BOOK IS AVAILABLE ON FLIPKART
SHABDAHUTI